

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ
مَا بَعُدَ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

किताब पढ़ने की दुआ

अज् : शैखे तरीकत, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरी र-जवी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ
दीनी किताब या इस्लामी सबक पढ़ने से पहले जैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये
ان شاء الله عزوجل जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اللَّهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَأَنْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عزوجل ! हम पर इल्मो हिकमत के दरवाजे खोल दे और हम पर अपनी रहमत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ-ज़मत और बुजुर्गी वाले । (المستطرف ج ١ ص ٤٠ دارالفكر بيروت)
नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये ।

तालिबे गुमे मदीना
व बकीअ
व मग़िफ़रत



13 शब्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

वुजू का तरीका

येह रिसाला (वुजू का तरीका)

शैखे तरीकत, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी हज़रत अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरी र-जवी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ ने उर्दू ज़बान में तहरीर फ़रमाया है ।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को हिन्दी रस्मुल खत में तरतीब दे कर पेश किया है और मक-त-बतुल मदीना से शाएअ करवाया है । इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअए मक्तूब, ई-मेइल या SMS) मुत्तलअ फ़रमा कर सवाब कमाइये ।

राबिता : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

मक-त-बतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अहमदआबाद-1, गुजरात

MO. 9374031409 E-mail : translationmaktabhind@dawateislami.net

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ
 آمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

बुजू का तरीका (ह-नफी)

येह रिसाला अब्वल ता आखिर पूरा पढ़िये, कवी इम्कान है कि आप की कई ग-लतियां आप के सामने आ जाएं।

दुरूद शरीफ की फज़ीलत

सरकारे दो आलम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम, रसूले मुहूतशम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने मुअज़्ज़म है : “जिस ने दिन और रात में मेरी तरफ़ शौक व महबूत की वजह से तीन तीन मर्तबा दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ पर हक़ है कि वोह उस के उस दिन और उस रात के गुनाह बख़्शा दे।”

(الْمُنَجِّمُ الْكَبِيرُ لِلطَّبْرَانِيِّ ج ١٨ ص ٣٦٢ حديث ٩٢٨)

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْبُ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٌ

उस्माने ग़नी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ का इश्के रसूल

हज़रते सय्यिदुना उस्माने ग़नी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने एक बार एक मक़ाम पर पहुंच कर पानी मंगवाया और बुजू किया फिर यकायक मुस्कुराने और रु-फ़का से फ़रमाने लगे : जानते हो मैं क्यूं मुस्कुराया ?

फ़रमाने मुस्त्फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर एक बार दुरुदे पाक पढ़ा अल्लाह عُزَّوَجَلَّ उस पर दस (स) रहमतें भेजता है।

फिर खुद ही इस सुवाल का जवाब देते हुए फ़रमाया : मैं ने देखा सरकारे नामदार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने वुजू फ़रमाया था और बा'दे फ़रागत मुस्कुराए थे और सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان से फ़रमाया था : जानते हो मैं क्यूं मुस्कुराया ? फिर मीठे मीठे मुस्त्फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने खुद ही फ़रमाया : “जब आदमी वुजू करता है तो चेहरा धोने से चेहरे के और हाथ धोने से हाथों के और सर का मस्ह करने से सर के और पाउं धोने से पाउं के गुनाह झड़ जाते हैं।”

(مُسْنَدُ إِمَامِ أَحْمَدَ بْنِ حَنْبَلٍ ج ١ ص ١٣٠ حَدِيثُ ٤١٥)

वुजू कर के ख़न्दां हुए शाहे इस्मां कहा : क्यूं तबस्सुम भला कर रहा हूं ? जवाबे सुवाले मुख़ातब दिया फिर किसी की अदा को अदा कर रहा हूं

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْبُ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٌ

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ? सहाबए किराम

صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की हर हर अदा और हर हर सुन्नत को दीवाना वार अपनाते थे । नीज इस रिवायत से गुनाह धोने का नुस्खा भी मा'लूम हो गया । الْحَمْدُ لِلَّهِ عُزَّوَجَلَّ वुजू में कुल्ली करने से मुंह के, नाक में पानी डाल कर साफ़ करने से नाक के, चेहरा धोने से पलकों समेत सारे चेहरे के, हाथ धोने से हाथ के साथ साथ नाखुनों के नीचे के, सर (और कानों) का मस्ह करने से सर के साथ साथ कानों के और पाउं धोने से पाउं के साथ साथ पाउं के नाखुनों के नीचे के गुनाह भी झड़ जाते हैं ।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : उस शख्स की नाक खाक आलूद हो जिस के पास मेरा जिक्र हो और वाह मुझ पर दुरूदे पाक न पड़े। (ترمذی)

गुनाह झड़ने की हिकायत

الْحَمْدُ لِلَّهِ عَزَّ وَجَلَّ वुजू करने वाले के गुनाह झड़ते हैं, इस जिम्न में एक ईमान अफ़रोज़ हिकायत नक़ल करते हुए हज़रते अल्लामा अब्दुल वहहाब शा'रानी فَرَمَاتے हैं : एक मर्तबा सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू हनीफ़ा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ जामे अ मस्जिद कूफ़ा के वुजूख़ाने में तशरीफ़ ले गए तो एक नौ जवान को वुजू बनाते हुए देखा, उस से वुजू (में इस्ति'माल शुदा पानी) के क़तरे टपक रहे थे। आप ने इर्शाद फ़रमाया : ऐ बेटे ! मां बाप की ना फ़रमानी से तौबा कर ले। उस ने फ़ौरन अर्ज़ की : मैं ने तौबा की। एक और शख्स के वुजू (में इस्ति'माल होने वाले पानी) के क़तरे टपक्ते देखे, आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने उस शख्स से इर्शाद फ़रमाया : ऐ मेरे भाई ! तू जिना से तौबा कर ले। उस ने अर्ज़ की : मैं ने तौबा की। एक और शख्स के वुजू के क़तरात टपक्ते देखे तो उसे फ़रमाया : शराब नोशी और गाने बाजे सुनने से तौबा कर ले। उस ने अर्ज़ की : मैं ने तौबा की। सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू हनीफ़ा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ पर कश्फ़ के बाइस चूंकि लोगों के उयूब ज़ाहिर हो जाते थे लिहाज़ा आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने बारगाहे खुदा वन्दी عَزَّ وَجَلَّ में इस कश्फ़ के ख़त्म हो जाने की दुआ मांगी : اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَسْأَلُكَ بِرَحْمَتِكَ اَنْ تَجْعَلَ لِيْ دُوَاةً يُّغْفِرُ لِيْ بِهَا ذُنُوْبِيْ وَتَجْعَلَ لِيْ دُوَاةً يُّغْفِرُ لِيْ بِهَا ذُنُوْبِيْ وَتَجْعَلَ لِيْ دُوَاةً يُّغْفِرُ لِيْ بِهَا ذُنُوْبِيْ जिस से आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ को वुजू करने वालों के गुनाह झड़ते नज़र आना बन्द हो गए।

(الْمُبَيَّنَاتُ الْكُبْرَى ج ١ ص ١٣٠)

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٌ

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुझ पर दस मरतबा दुरूदे पाक पढ़े अल्लाह رَجَلِ उस पर सो रहमते (طَرَبِي) नाजिल फ़रमाता है ।

वुजू का सवाब नहीं मिलेगा

आ'माल का दारो मदार निय्यतों पर है : अगर किसी अमल में अच्छी निय्यत न हो तो उस का सवाब नहीं मिलता । येही हाल वुजू का भी है, चुनान्वे दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ 1250 सफ़हात पर मुशतमिल किताब, "बहारे शरीअत मुखर्रजा जिल्द अव्वल" सफ़हा 292 पर है : वुजू पर सवाब पाने के लिये हुक्मे इलाही बजा लाने की निय्यत से वुजू करना ज़रूर है वरना वुजू हो जाएगा सवाब न पाएगा । आ'ला हज़रत رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ हज़रत फ़रमाते हैं : वुजू में निय्यत न करने की आदत से गुनहगार होगा, इस में निय्यत सुन्नते मुअक्कदा है । (फ़तावा र-जविख्या मुखर्रजा, जि. 4, स. 616)

सारा बदन पाक हो गया !

दो हृदीसों का खुलासा है : जिस ने بِسْمِ اللَّهِ कह कर वुजू किया उस का सर से पाउं तक सारा जिस्म पाक हो गया और जिस ने बिगैर اللَّهِ بِسْمِ اللَّهِ कहे वुजू किया उस का उतना ही बदन पाक होगा जितने पर पानी गुज़रा ।

(سُنَنِ دَارَقُطْنِي ج 1 ص 108، 109، 110، 111، 112، 113، 114، 115، 116، 117، 118، 119، 120، 121، 122، 123، 124، 125، 126، 127، 128، 129، 130، 131، 132، 133، 134، 135، 136، 137، 138، 139، 140، 141، 142، 143، 144، 145، 146، 147، 148، 149، 150، 151، 152، 153، 154، 155، 156، 157، 158، 159، 160، 161، 162، 163، 164، 165، 166، 167، 168، 169، 170، 171، 172، 173، 174، 175، 176، 177، 178، 179، 180، 181، 182، 183، 184، 185، 186، 187، 188، 189، 190، 191، 192، 193، 194، 195، 196، 197، 198، 199، 200، 201، 202، 203، 204، 205، 206، 207، 208، 209، 210، 211، 212، 213، 214، 215، 216، 217، 218، 219، 220، 221، 222، 223، 224، 225، 226، 227، 228، 229، 230، 231، 232، 233، 234، 235، 236، 237، 238، 239، 240، 241، 242، 243، 244، 245، 246، 247، 248، 249، 250، 251، 252، 253، 254، 255، 256، 257، 258، 259، 260، 261، 262، 263، 264، 265، 266، 267، 268، 269، 270، 271، 272، 273، 274، 275، 276، 277، 278، 279، 280، 281، 282، 283، 284، 285، 286، 287، 288، 289، 290، 291، 292، 293، 294، 295، 296، 297، 298، 299، 300، 301، 302، 303، 304، 305، 306، 307، 308، 309، 310، 311، 312، 313، 314، 315، 316، 317، 318، 319، 320، 321، 322، 323، 324، 325، 326، 327، 328، 329، 330، 331، 332، 333، 334، 335، 336، 337، 338، 339، 340، 341، 342، 343، 344، 345، 346، 347، 348، 349، 350، 351، 352، 353، 354، 355، 356، 357، 358، 359، 360، 361، 362، 363، 364، 365، 366، 367، 368، 369، 370، 371، 372، 373، 374، 375، 376، 377، 378، 379، 380، 381، 382، 383، 384، 385، 386، 387، 388، 389، 390، 391، 392، 393، 394، 395، 396، 397، 398، 399، 400، 401، 402، 403، 404، 405، 406، 407، 408، 409، 410، 411، 412، 413، 414، 415، 416، 417، 418، 419، 420، 421، 422، 423، 424، 425، 426، 427، 428، 429، 430، 431، 432، 433، 434، 435، 436، 437، 438، 439، 440، 441، 442، 443، 444، 445، 446، 447، 448، 449، 450، 451، 452، 453، 454، 455، 456، 457، 458، 459، 460، 461، 462، 463، 464، 465، 466، 467، 468، 469، 470، 471، 472، 473، 474، 475، 476، 477، 478، 479، 480، 481، 482، 483، 484، 485، 486، 487، 488، 489، 490، 491، 492، 493، 494، 495، 496، 497، 498، 499، 500، 501، 502، 503، 504، 505، 506، 507، 508، 509، 510، 511، 512، 513، 514، 515، 516، 517، 518، 519، 520، 521، 522، 523، 524، 525، 526، 527، 528، 529، 530، 531، 532، 533، 534، 535، 536، 537، 538، 539، 540، 541، 542، 543، 544، 545، 546، 547، 548، 549، 550، 551، 552، 553، 554، 555، 556، 557، 558، 559، 560، 561، 562، 563، 564، 565، 566، 567، 568، 569، 570، 571، 572، 573، 574، 575، 576، 577، 578، 579، 580، 581، 582، 583، 584، 585، 586، 587، 588، 589، 590، 591، 592، 593، 594، 595، 596، 597، 598، 599، 600، 601، 602، 603، 604، 605، 606، 607، 608، 609، 610، 611، 612، 613، 614، 615، 616، 617، 618، 619، 620، 621، 622، 623، 624، 625، 626، 627، 628، 629، 630، 631، 632، 633، 634، 635، 636، 637، 638، 639، 640، 641، 642، 643، 644، 645، 646، 647، 648، 649، 650، 651، 652، 653، 654، 655، 656، 657، 658، 659، 660، 661، 662، 663، 664، 665، 666، 667، 668، 669، 670، 671، 672، 673، 674، 675، 676، 677، 678، 679، 680، 681، 682، 683، 684، 685، 686، 687، 688، 689، 690، 691، 692، 693، 694، 695، 696، 697، 698، 699، 700، 701، 702، 703، 704، 705، 706، 707، 708، 709، 710، 711، 712، 713، 714، 715، 716، 717، 718، 719، 720، 721، 722، 723، 724، 725، 726، 727، 728، 729، 730، 731، 732، 733، 734، 735، 736، 737، 738، 739، 740، 741، 742، 743، 744، 745، 746، 747، 748، 749، 750، 751، 752، 753، 754، 755، 756، 757، 758، 759، 760، 761، 762، 763، 764، 765، 766، 767، 768، 769، 770، 771، 772، 773، 774، 775، 776، 777، 778، 779، 780، 781، 782، 783، 784، 785، 786، 787، 788، 789، 790، 791، 792، 793، 794، 795، 796، 797، 798، 799، 800، 801، 802، 803، 804، 805، 806، 807، 808، 809، 810، 811، 812، 813، 814، 815، 816، 817، 818، 819، 820، 821، 822، 823، 824، 825، 826، 827، 828، 829، 830، 831، 832، 833، 834، 835، 836، 837، 838، 839، 840، 841، 842، 843، 844، 845، 846، 847، 848، 849، 850، 851، 852، 853، 854، 855، 856، 857، 858، 859، 860، 861، 862، 863، 864، 865، 866، 867، 868، 869، 870، 871، 872، 873، 874، 875، 876، 877، 878، 879، 880، 881، 882، 883، 884، 885، 886، 887، 888، 889، 890، 891، 892، 893، 894، 895، 896، 897، 898، 899، 900، 901، 902، 903، 904، 905، 906، 907، 908، 909، 910، 911، 912، 913، 914، 915، 916، 917، 918، 919، 920، 921، 922، 923، 924، 925، 926، 927، 928، 929، 930، 931، 932، 933، 934، 935، 936، 937، 938، 939، 940، 941، 942، 943، 944، 945، 946، 947، 948، 949، 950، 951، 952، 953، 954، 955، 956، 957، 958، 959، 960، 961، 962، 963، 964، 965، 966، 967، 968، 969، 970، 971، 972، 973، 974، 975، 976، 977، 978، 979، 980، 981، 982، 983، 984، 985، 986، 987، 988، 989، 990، 991، 992، 993، 994، 995، 996، 997، 998، 999، 1000)

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि सरकारे मदीना, सुलताने बा करीना, करारे कल्बो सीना, फैज गन्जीना, साहिबे मुअत्तर पसीना, बाइसे नुजूले सकीना صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इर्शाद फ़रमाया : "ऐ अबू हुरैरा (رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ) जब तुम वुजू करो तो إِسْمِ اللَّهِ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ कह लिया करो जब तक तुम्हारा वुजू बाकी रहेगा उस वक्त तक तुम्हारे फ़िरिश्ते (या'नी किरामन कातिबीन) तुम्हारे लिये नेकियां लिखते रहेंगे ।"

(التَّعْجُمُ الصَّغِيرُ لِلطَّبْرَانِيِّ ج 1 ص 73، 74، 75، 76، 77، 78، 79، 80، 81، 82، 83، 84، 85، 86، 87، 88، 89، 90، 91، 92، 93، 94، 95، 96، 97، 98، 99، 100، 101، 102، 103، 104، 105، 106، 107، 108، 109، 110، 111، 112، 113، 114، 115، 116، 117، 118، 119، 120، 121، 122، 123، 124، 125، 126، 127، 128، 129، 130، 131، 132، 133، 134، 135، 136، 137، 138، 139، 140، 141، 142، 143، 144، 145، 146، 147، 148، 149، 150، 151، 152، 153، 154، 155، 156، 157، 158، 159، 160، 161، 162، 163، 164، 165، 166، 167، 168، 169، 170، 171، 172، 173، 174، 175، 176، 177، 178، 179، 180، 181، 182، 183، 184، 185، 186، 187، 188، 189، 190، 191، 192، 193، 194، 195، 196، 197، 198، 199، 200، 201، 202، 203، 204، 205، 206، 207، 208، 209، 210، 211، 212، 213، 214، 215، 216، 217، 218، 219، 220، 221، 222، 223، 224، 225، 226، 227، 228، 229، 230، 231، 232، 233، 234، 235، 236، 237، 238، 239، 240، 241، 242، 243، 244، 245، 246، 247، 248، 249، 250، 251، 252، 253، 254، 255، 256، 257، 258، 259، 260، 261، 262، 263، 264، 265، 266، 267، 268، 269، 270، 271، 272، 273، 274، 275، 276، 277، 278، 279، 280، 281، 282، 283، 284، 285، 286، 287، 288، 289، 290، 291، 292، 293، 294، 295، 296، 297، 298، 299، 300، 301، 302، 303، 304، 305، 306، 307، 308، 309، 310، 311، 312، 313، 314، 315، 316، 317، 318، 319، 320، 321، 322، 323، 324، 325، 326، 327، 328، 329، 330، 331، 332، 333، 334، 335، 336، 337، 338، 339، 340، 341، 342، 343، 344، 345، 346، 347، 348، 349، 350، 351، 352، 353، 354، 355، 356، 357، 358، 359، 360، 361، 362، 363، 364، 365، 366، 367، 368، 369، 370، 371، 372، 373، 374، 375، 376، 377، 378، 379، 380، 381، 382، 383، 384، 385، 386، 387، 388، 389، 390، 391، 392، 393، 394، 395، 396، 397، 398، 399، 400، 401، 402، 403، 404، 405، 406، 407، 408، 409، 410، 411، 412، 413، 414، 415، 416، 417، 418، 419، 420، 421، 422، 423، 424، 425، 426، 427، 428، 429، 430، 431، 432، 433، 434، 435، 436، 437، 438، 439، 440، 441، 442، 443، 444، 445، 446، 447، 448، 449، 450، 451، 452، 453، 454، 455، 456، 457، 458، 459، 460، 461، 462، 463، 464، 465، 466، 467، 468، 469، 470، 471، 472، 473، 474، 475، 476، 477، 478، 479، 480، 481، 482، 483، 484، 485، 486، 487، 488، 489، 490، 491، 492، 493، 494، 495، 496، 497، 498، 499، 500، 501، 502، 503، 504، 505، 506، 507، 508، 509، 510، 511، 512، 513، 514، 515، 516، 517، 518، 519، 520، 521، 522، 523، 524، 525، 526، 527، 528، 529، 530، 531، 532، 533، 534، 535، 536، 537، 538، 539، 540، 541، 542، 543، 544، 545، 546، 547، 548، 549، 550، 551، 552، 553، 554، 555، 556، 557، 558، 559، 560، 561، 562، 563، 564، 565، 566، 567، 568، 569، 570، 571، 572، 573، 574، 575، 576، 577، 578، 579، 580، 581، 582، 583، 584، 585، 586، 587، 588، 589، 590، 591، 592، 593، 594، 595، 596، 597، 598، 599، 600، 601، 602، 603، 604، 605، 606، 607، 608، 609، 610، 611، 612، 613، 614، 615، 616، 617، 618، 619، 620، 621، 622، 623، 624، 625، 626، 627، 628، 629، 630، 631، 632، 633، 634، 635، 636، 637، 638، 639، 640، 641، 642، 643، 644، 645، 646، 647، 648، 649، 650، 651، 652، 653، 654، 655، 656، 657، 658، 659، 660، 661، 662، 663، 664، 665، 666، 667، 668، 669، 670، 671، 672، 673، 674، 675، 676، 677، 678، 679، 680، 681، 682، 683، 684، 685، 686، 687، 688، 689، 690، 691، 692، 693، 694، 695، 696، 697، 698، 699، 700، 701، 702، 703، 704، 705، 706، 707، 708، 709، 710، 711، 712، 713، 714، 715، 716، 717، 718، 719، 720، 721، 722، 723، 724، 725، 726، 727، 728، 729، 730، 731، 732، 733، 734، 735، 736، 737، 738، 739، 740، 741، 742، 743، 744، 745، 746، 747، 748، 749، 750، 751، 752، 753، 754، 755، 756، 757، 758، 759، 760، 761، 762، 763، 764، 765، 766، 767، 768، 769، 770، 771، 772، 773، 774، 775، 776، 777، 778، 779، 780، 781، 782، 783، 784، 785، 786، 787، 788، 789، 790، 791، 792، 793، 794، 795، 796، 797، 798، 799، 800، 801، 802، 803، 804، 805، 806، 807، 808، 809، 810، 811، 812، 813، 814، 815، 816، 817، 818، 819، 820، 821، 822، 823، 824، 825، 826، 827، 828، 829، 830، 831، 832، 833، 834، 835، 836، 837، 838، 839، 840، 841، 842، 843، 844، 845، 846، 847، 848، 849، 850، 851، 852، 853، 854، 855، 856، 857، 858، 859، 860، 861، 862، 863، 864، 865، 866، 867، 868، 869، 870، 871، 872، 873، 874، 875، 876، 877، 878، 879، 880، 881، 882، 883، 884، 885، 886، 887، 888، 889، 890، 891، 892، 893، 894، 895، 896، 897، 898، 899، 900، 901، 902، 903، 904، 905، 906، 907، 908، 909، 910، 911، 912، 913، 914، 915، 916، 917، 918، 919، 920، 921، 922، 923، 924، 925، 926، 927، 928، 929، 930، 931، 932، 933، 934، 935، 936، 937، 938، 939، 940، 941، 942، 943، 944، 945، 946، 947، 948، 949، 950، 951، 952، 953، 954، 955، 956، 957، 958، 959، 960، 961، 962، 963، 964، 965، 966، 967، 968، 969، 970، 971، 972، 973، 974، 975، 976، 977، 978، 979، 980، 981، 982، 983، 984، 985، 986، 987، 988، 989، 990، 991، 992، 993، 994، 995، 996، 997، 998، 999، 1000)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तहकीक वोह बद बख्त हो गया। (ابن تيمية)

बा वुजू सोने की फ़ज़ीलत

हदीसे पाक में है : बा वुजू सोने वाला रोज़ा रख कर इबादत करने वाले की तरह है। (كُنْزُ الْقَمَالِ ج ٩ ص ٢٣١ حديث ٢٠٩٩٤)

बा वुजू मरने वाला शहीद है

मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने हज़रते सय्यिदुना अनस رضي اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से फ़रमाया : बेटा ! अगर तुम हमेशा बा वुजू रहने की इस्तिताअत रखो तो ऐसा ही करो क्यूं कि म-लकुल मौत जिस बन्दे की रूह हालते वुजू में कब्ज़ करता है उस के लिये शहादत लिख दी जाती है। (شُعَبُ الْإِيمَانِ ج ٣ ص ٢٩ حديث ٢٧٨٢)

मेरे आका आ'ला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ फ़रमाते हैं : हमेशा बा वुजू रहना मुस्तहब है।

मुसीबतों से हिफ़ाज़त का नुस्खा

अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ ने हज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام से फ़रमाया : “ऐ मूसा ! अगर बे वुजू होने की सूरत में तुझे कोई मुसीबत पहुंचे तो खुद अपने आप को मलामत करना।” (شُعَبُ الْإِيمَانِ ج ٣ ص ٢٩ رقم ٢٧٨٢)

“फ़तावा र-ज़विय्या” में है : हमेशा बा वुजू रहना इस्लाम की सुन्नत है। (फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 1, स. 702)

“अहमद रज़ा” के सात हुरूफ़ की निस्बत से

हर वक़्त बा वुजू रहने के सात फ़ज़ाइल

मेरे आका इमामे अहले सुन्नत इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर सुबह व शाम दस दस बार दुरूदे पाक पढ़ा उसे कियामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी। (بخ الرواة)

फ़रमाते हैं : बा'ज अरिफ़ीन (رَحْمَهُمُ اللهُ الْمُبِين) ने फ़रमाया : जो हमेशा बा वुजू रहे अल्लाह तआला उस को सात फ़ज़ीलतों से मुशरफ़ फ़रमाए :
 ﴿1﴾ मलाएका उस की सोहबत में रबत करें ﴿2﴾ क़लम उस की नेकियां लिखता रहे ﴿3﴾ उस के आ'ज़ा तस्बीह करें ﴿4﴾ उस से तक्बीरे ऊला फ़ौत न हो ﴿5﴾ जब सोए अल्लाह तआला कुछ फ़िरिशते भेजे कि जिन्नो इन्स के शर से उस की हिफ़ाज़त करें ﴿6﴾ सक़्राते मौत उस पर आसान हो ﴿7﴾ जब तक बा वुजू हो अमाने इलाही में रहे। (ऐज़न, स. 702, 703)

दुगना सवाब

यक़ीनन सर्दी, थकन या नज़ला, जुकाम, दर्दे सर और बीमारी में वुजू करना दुश्वार होता है मगर फिर भी कोई ऐसे वक़्त वुजू करे जब कि वुजू करना दुश्वार हो तो उस को ब हुक्मे हदीस दुगना सवाब मिलेगा।

(الْمُنْعَجُ الْأَوْسَطُ لِلطَّبْرَانِي ج ٤ ص ١٠٦ حدیث ٥٢٦٦)

सर्दी में वुजू करने की हिकायत

हज़रते उस्माने ग़नी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने अपने गुलाम, हुमरान से वुजू के लिये पानी मांगा और सर्दी की रात में बाहर जाना चाहते थे हुमरान कहते हैं : मैं पानी लाया, उन्होंने ने मुंह हाथ धोए तो मैं ने कहा : अल्लाह आप को क़िफ़ायत करे रात तो बहुत ठन्डी है। इस पर फ़रमाया कि : मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ से सुना है कि “जो बन्दा वुजूए कामिल करता है अल्लाह तआला उस के अगले पिछले गुनाह बख़्श देता है।”

(مسندو بزار ج ٢ ص ٧٥ حدیث ٤٢٢)

फरमाने मुस्तफ़ा عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुरुद शरीफ़ न पढ़ा उस ने जफ़ा की। (عبدالرزاق)

वुजू का तरीका (ह-नफी)

का 'बतुल्लाह शरीफ़ की तरफ़ मुंह कर के ऊंची जगह बैठना मुस्तहब है। वुजू के लिये **निय्यत** करना सुन्नत है, निय्यत न हो तब भी वुजू हो जाएगा मगर सवाब नहीं मिलेगा। निय्यत दिल के इरादे को कहते हैं, दिल में निय्यत होते हुए ज़बान से भी कह लेना अफ़ज़ल है लिहाज़ा ज़बान से इस तरह निय्यत कीजिये कि मैं **हुक्मे इलाही** **عَزَّ وَجَلَّ** **बजा लाने** और **पाकी हासिल करने के लिये वुजू कर रहा हूँ**। **بِسْمِ اللَّهِ** कह लीजिये कि ये भी सुन्नत है। बल्कि **بِسْمِ اللَّهِ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ** कह लीजिये कि जब तक बा वुजू रहेंगे फिरिश्ते नेकियां लिखते रहेंगे।¹ अब **दोनों हाथ** तीन तीन बार पहुंचों तक धोइये, (नल बन्द कर के) दोनों हाथों की उंगलियों का खिलाल भी कीजिये। कम अज़ कम तीन तीन बार दाएं बाएं ऊपर नीचे के दांतों में **मिस्वाक** कीजिये और हर बार मिस्वाक को धो लीजिये। **हुज्जतुल इस्लाम** हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद बिन मुहम्मद बिन मुहम्मद गज़ाली **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَالِي** फ़रमाते हैं : “मिस्वाक करते वक़्त नमाज़ में कुरआने मजीद की क़िराअत और **जिब्रुकुल्लाह** **عَزَّ وَجَلَّ** के लिये मुंह पाक करने की निय्यत करनी चाहिये।”² अब सीधे हाथ के तीन चुल्लू पानी से (हर बार नल बन्द कर के) इस तरह **तीन कुल्लियां** कीजिये कि हर बार मुंह के हर पुर्जे पर (हल्क़ के कनारे तक) पानी बह जाए, अगर रोज़ा न हो तो **गर-गरा** भी कर लीजिये। फिर सीधे ही हाथ के तीन चुल्लू (अब हर बार आधा चुल्लू पानी काफ़ी है) से (हर बार नल बन्द कर के) **तीन बार नाक** में नर्म गोश्त तक पानी चढ़ाइये और अगर रोज़ा न हो तो नाक की जड़ तक पानी पहुंचाइये, अब (नल बन्द

مدینہ

फरमाने मुस्तफा عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : जो मुझ पर रोजे जुमुआ दुरूद शरीफ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस को शफ़ाअत करूँगा। (جمع الجوامع)

कर के) उलटे हाथ से नाक साफ़ कर लीजिये और छोटी उंगली नाक के सूराखों में डालिये। **तीन बार सारा चेहरा** इस तरह धोइये कि जहां से आदतन सर के बाल उगना शुरू होते हैं वहां से ले कर ठोड़ी के नीचे तक और एक कान की लौ से दूसरे कान की लौ तक हर जगह पानी बह जाए। अगर दाढ़ी है और एहराम बांधे हुए नहीं हैं तो (नल बन्द करने के बाद) इस तरह **ख़िलाल** कीजिये कि उंगलियों को गले की तरफ़ से दाख़िल कर के सामने की तरफ़ निकालिये फिर पहले सीधा हाथ उंगलियों के सिरे से धोना शुरू कर के कोहनियों समेत तीन बार धोइये। इसी तरह फिर **उलटा हाथ** धो लीजिये। दोनों हाथ आधे बाजू तक धोना मुस्तहब है। **अक्सर लोग चुल्लू में पानी ले कर पहुंचे से तीन बार छोड़ देते हैं कि कोहनी तक बहता चला जाता है इस तरह करने से कोहनी और कलाई की करवटों पर पानी न पहुंचने का अन्देशा है लिहाज़ा बयान कर्दा तरीके पर हाथ धोइये। अब चुल्लू भर कर कोहनी तक पानी बहाने की ह़ाज़त नहीं बल्कि** (बिग़ैर इजाज़ते सहीह़ा ऐसा करना) **येह पानी का इसराफ़ है। अब** (नल बन्द कर के) **सर का मस्ह** इस तरह कीजिये कि दोनों अंगूठों और कलिमे की उंगलियों को छोड़ कर दोनों हाथ की तीन तीन उंगलियों के सिरे एक दूसरे से मिला लीजिये और पेशानी के बाल या खाल पर रख कर खींचते हुए गुद्दी तक इस तरह ले जाइये कि हथेलियां सर से जुदा रहें, फिर गुद्दी से हथेलियां खींचते हुए पेशानी तक ले आइये,¹ कलिमे की उंगलियां और अंगूठे इस दौरान सर पर बिल्कुल मस नहीं होने चाहिए, फिर

1 : सर पर मस्ह का एक तरीका येह भी तहरीर है इस में बिल खुसूस इस्लामी बहनों के लिये ज़ियादा आसानी है चुनान्वे लिखा है : मस्हे सर में अदाए सुन्नत को येह भी काफ़ी है कि उंगलियां सर के अगले हिस्से पर रखे और हथेलियां सर की करवटों पर और हाथ जमा कर गुद्दी तक खींचता ले जाए। (फ़तावा र-ज़बिय्या मुख़र्रजा, जि. 4, स. 621)

फ़रमाने मुस्तफ़ा عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पड़ा उस ने जन्नत का रास्ता छोड़ दिया। (टर्न)।

कलिमे की उंगलियों से कानों की अन्दरूनी सतह का और अंगूठों से कानों की बाहरी सतह का मसह कीजिये और छुंग्लियां (या'नी छोटी उंगलियां) कानों के सूरखों में दाखिल कीजिये और उंगलियों की पुशत से गरदन के पिछले हिस्से का मसह कीजिये। बा'ज लोग गले का और धुले हुए हाथों की कोहनियों और कलाइयों का मसह करते हैं यह सुन्नत नहीं है। **सर का मसह करने से क़ब्ल टोंटी अच्छी तरह बन्द करने की आदत बना लीजिये** बिला वजह नल खुला छोड़ देना या अधूरा बन्द करना कि पानी टपक कर जाएँ होता रहे इसराफ़ व गुनाह है। **पहले सीधा फिर उलटा पाउं** हर बार उंगलियों से शुरूअ कर के **टख़्नों** के ऊपर तक बल्कि मुस्तहब है कि आधी पिंडली तक तीन तीन बार धो लीजिये। दोनों पाउं की उंगलियों का ख़िलाल करना सुन्नत है। (ख़िलाल के दौरान नल बन्द रखिये) इस का मुस्तहब तरीका यह है कि उलटे हाथ की छुंग्लिया से सीधे पाउं की छुंग्लिया का ख़िलाल शुरूअ कर के अंगूठे पर ख़त्म कीजिये और उलटे ही हाथ की छुंग्लिया से उलटे पाउं के अंगूठे से शुरूअ कर के छुंग्लिया पर ख़त्म कर लीजिये।

(आम्मए कुतुब)

हुज्जतुल इस्लाम हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद बिन मुहम्मद बिन मुहम्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَالِي फ़रमाते हैं : हर उज़्च धोते वक़्त यह उम्मीद करता रहे कि मेरे इस उज़्च के गुनाह निकल रहे हैं।

(احياء العلوم ج ۱ ص ۱۸۳ مُلَخَّصًا)

वुजू के बचे हुए पानी में 70 बीमारियों से शिफ़ा

लोटे वगैरा से वुजू करने के बा'द बचा हुआ पानी खड़े हो कर पीने में शिफ़ा है चुनान्वे मेरे आका आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن “फ़तावा

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुझ पर दुरूदे पाक को कसरत करो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे लिये पाकीजगी का बाइस है। (ब्रिगेल)

र-जविय्या” मुखर्जा जिल्द 4 सफ़हा 575 ता 576 पर फ़रमाते हैं : बक़िय्याए वुजू (या’नी वुजू के बचे हुए पानी) के लिये शरअन अ-ज-मतो एहतिराम है और नबी صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ से साबित कि हुज़ूर ने वुजू फ़रमा कर बक़िय्या आब (या’नी बचे हुए पानी) को खड़े हो कर नोश फ़रमाया और एक हदीस में रिवायत किया गया कि इस का पीना सत्तर मरज़ से शिफ़ा है। तो वोह इन उमूर में आबे ज़मज़म से मुशा-बहत रखता है ऐसे पानी से इस्तिन्जा मुनासिब नहीं। “तन्वीर” के आदाबे वुजू में है : “वुजू के बा’द वुजू का पसमान्दा (या’नी बचा हुआ पानी) क़िब्ला रुख़ खड़े हो कर पिये।” अल्लामा अब्दुल ग़नी नाबुलुसी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ नाबुलुसी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : मैं ने तजरिबा किया है कि जब मैं बीमार होता हूँ तो वुजू के बक़िय्या पानी से शिफ़ा हासिल हो जाती है। नबिय्ये सादिक صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के इस सहीह तिब्बे न-बवी में पाए जाने वाले इशादि गिरामी पर ए’तिमाद करते हुए मैं ने येह तरीका इख़्तियार किया है।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

जन्नत के आठों दरवाज़े खुल जाते हैं

हदीसे पाक में है : जिस ने अच्छी तरह वुजू किया और फिर आस्मान की तरफ़ निगाह उठाई और कलिमए शहादत पढ़ा उस के लिये जन्नत के आठों दरवाज़े खोल दिये जाते हैं जिस से चाहे अन्दर दाख़िल हो।

(सुन्नं दारुमी ज १ व ११६ हदीथ ७१६)

नज़र कभी कमज़ोर न हो

जो वुजू के बा’द आस्मान की तरफ़ देख कर सूरए اِنَّا اَنْزَلْنَاهُ پढ़ लिया करे اِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ उस की नज़र कभी कमज़ोर न होगी।

(मसाइलुल कुरआन, स. 291)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़े तो वोह लोगों में से कज़ूस तरीन शख्स है। (مسند احمد)

वुजू के बा 'द तीन बार सूए क़द्र पढ़ने के फ़ज़ाइल

हदीसे मुबारक में है : जो वुजू के बा 'द एक मर्तबा सू-रतुल क़द्र पढ़े तो वोह सिद्दीकीन में से है और जो दो मर्तबा पढ़े तो शु-हदा में शुमार किया जाए और जो तीन मर्तबा पढ़ेगा तो अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ मैदाने महशर में उसे अपने अम्बिया के साथ रखेगा।

(کنز العمال ج ۹ ص ۱۳۲ رقم ۲۶۰۸۵، الحاوی للفتاوی للسیوطی ج ۱ ص ۴۰۲)

वुजू के बा 'द पढ़ने की दुआ (अव्वल व आख़िर दुरूद शरीफ़)

जो वुजू करने के बा 'द येह कलिमात पढ़े :

سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ وَبِحَمْدِكَ ترजमा : ऐ अल्लाह ! तू पाक है और तेरे लिये ही तमाम खूबियां हैं मैं गवाही देता हूं कि
أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ،
أَسْتَغْفِرُكَ وَأَتُوبُ إِلَيْكَ-
तेरे सिवा कोई मा'बूद नहीं, मैं तुझ से बख़िश
चाहता हूं और तेरी बारगाह में तौबा करता हूं।

तो उस पर मोहर लगा कर अर्श के नीचे रख दिया जाएगा और कियामत के दिन उस पढ़ने वाले को दे दिया जाएगा। (شُعَبُ الْإِيمَان ج ۳ ص ۲۱ رقم ۲۷۰۴)

वुजू के बा 'द येह दुआ भी पढ़ लीजिये (अव्वल व आख़िर दुरूद शरीफ़)

اللَّهُمَّ اجْعَلْنِي مِنَ التَّوَّابِينَ ترजमा : ऐ अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ ! मुझे कसरत
وَاجْعَلْنِي مِنَ الْمُتَطَهِّرِينَ-
से तौबा करने वालों में बना दे और मुझे
पाकीज़ा रहने वालों में शामिल कर दे।
(ترمذی ج ۱ ص ۱۲۱ حدیث ۵۰)

سَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّد

فرمانے مستفاداً : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : तुम जहां भी हो मुझ पर दुरूद पढ़ो कि तुम्हारा दुरूद मुझ तक पहुंचता है। (طبرانی)

लफ़्ज़ “अल्लाह” के चार हुरूफ़ की निस्बत से वुजू के चार फ़राइज़

☀ चेहरा धोना ☀ कोहनियों समेत दोनों हाथ धोना ☀ चौथाई सर का मस्ह करना ☀ टख़्नों समेत दोनों पाउं धोना ।

(عالمگیری ج ۱ ص ۴۰۳)، बहारे शरीअत, जि. 1, स. 288)

धोने की ता'रीफ़

किसी उज़्व धोने के येह मा'ना हैं कि उस उज़्व के हर हिस्से पर कम अज़ कम दो क़तरे पानी बह जाए । सिर्फ़ भीग जाने या पानी को तेल की तरह चुपड़ लेने या एक क़तरा बह जाने को धोना नहीं कहेंगे न इस तरह वुजू या गुस्ल अदा होगा ।

(फ़तावा र-जविय्या मुख़र्रजा, जि. 1, स. 218, बहारे शरीअत, जि. 1, स. 288)

“करम या रब्बल आ-लमीन” के चौदह हुरूफ़ की निस्बत से वुजू की 14 सुन्नतें

“वुजू का तरीका” (ह-नफ़ी) में बा'ज सुन्नतों और मुस्तहब्बात का बयान हो चुका है इस की मज़ीद वज़ाहत मुला-हज़ा फ़रमाइये :

☀ निय्यत करना ☀ بِسْمِ اللهِ पढ़ना । अगर वुजू से क़ब्लِ اللهُ وَالْحَمْدُ لِلّهِ कह लें तो जब तक बा वुजू रहेंगे फ़िरिश्ते नेकियां लिखते रहेंगे ☀ दोनों हाथ पहुंचों तक तीन बार धोना ☀ तीन बार मिस्वाक करना ☀ तीन चुल्लू से तीन बार कुल्ली करना ☀ रोज़ा न हो तो गर-गरा करना ☀ तीन चुल्लू से तीन बार नाक में पानी चढ़ाना ☀ दाढ़ी हो तो (एहराम में न होने

फरमाने मुस्तफ़ा عَلَيَّ اللَّهُ تَعَالَى غَلِيْبُوْا وَ اَلْوَسَلُمْ : जो लोग अपनी मजलिस से अल्लाह के जिक्र और नबी पर दुरुद शरीफ़ पढ़े बिगैर उठ गए तो वोह बदबूदार मुर्दार से उठे । (شعب الإيمان)

की सूत में) उस का ख़िलाल करना ❁ हाथ और ❁ पाउं की उंगलियों का ख़िलाल करना ❁ पूरे सर का एक ही बार मस्ह करना ❁ कानों का मस्ह करना ❁ फ़राइज़ में तरतीब काइम रखना (या'नी फ़र्ज़ आ'ज़ा में पहले मुंह फिर हाथ कोहनियों समेत धोना, फिर सर का मस्ह करना और फिर पाउं धोना) और ❁ पै दर पै वुजू करना या'नी एक उज़्व सूखने न पाए कि दूसरा उज़्व धो लेना । (बहारे शरीअत, जि. 1, स. 293, 294 मुलख़बसन)

“या रसूलल्लाह तेरे दर की फ़जाओं को सलाम”
के उन्तीस हुरूफ़ की निस्बत से वुजू के 29 मुस्तहब्बात

❁ किब्ला रू ❁ ऊंची जगह ❁ बैठना ❁ पानी बहाते वक़्त आ'ज़ा पर हाथ फैरना ❁ इत्मीनान से वुजू करना ❁ आ'ज़ाए वुजू पर पहले पानी चुपड़ लेना खुसूसन सर्दियों में ❁ वुजू करने में बिगैर ज़रूरत किसी से मदद न लेना ❁ सीधे हाथ से कुल्ली करना ❁ सीधे हाथ से नाक में पानी चढ़ाना ❁ उलटे हाथ से नाक साफ़ करना ❁ उलटे हाथ की छुंग्लिया नाक में डालना ❁ उंगलियों की पुशत से गरदन की पुशत का मस्ह करना ❁ कानों का मस्ह करते वक़्त भीगी हुई छुंग्लिया (या'नी छोटी उंग्लियां) कानों के सूराखों में दाख़िल करना ❁ अंगूठी को ह-र-कत देना जब कि ढीली हो और येह यकीन हो कि इस के नीचे पानी बह गया है, अगर सख़्त हो तो ह-र-कत दे कर अंगूठी के नीचे पानी बहाना फ़र्ज़ है ❁ मा'जूरे शर-ई (इस के तफ़्सीली अहकाम इसी रिसाले के सफ़हा 32 ता 35 पर मुला-हज़ा फ़रमा लीजिये) न हो तो नमाज़ का वक़्त शुरूअ होने से

फरमाने मुस्तफ़ा عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर रोज़े जुमुआ दो सो बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआफ़ होंगे । (جمع الجوامع)

पहले ही वुजू कर लेना ❀ जो कामिल तौर पर वुजू करता है या'नी जिस की कोई जगह पानी बहने से न रह जाती हो उस का कूओं (या'नी नाक की तरफ़ आंखों के दोनों कोने) टख़्नों, एड़ियों, तल्वों, कूंचों (या'नी एड़ियों के ऊपर मोटे पट्टे) घाड़ियों (या'नी उंगलियों के दरमियान वाली जगहों) और कोहनियों का खुसूसियत के साथ खयाल रखना और बे खयाली करने वालों के लिये तो फ़र्ज़ है कि इन जगहों का खास खयाल रखें कि अक्सर देखा गया है कि येह जगहें खुशक रह जाती हैं और येह बे खयाली ही का नतीजा है ऐसी बे खयाली ह़राम है और खयाल रखना फ़र्ज़ ❀ वुजू का लोटा उलटी तरफ़ रखिये अगर त़शत या पतीली वगैरा से वुजू करें तो सीधी जानिब रखिये ❀ चेहरा धोते वक़्त पेशानी पर इस तरह फैला कर पानी डालना कि ऊपर का कुछ हिस्सा भी धुल जाए ❀ चेहरे और ❀ हाथ पाउं की रोशनी वसीअ़ करना या'नी जितनी जगह पानी बहाना फ़र्ज़ है उस के अतराफ़ में कुछ बढ़ाना म-सलन हाथ कोहनी से ऊपर आधे बाजू तक और पाउं टख़्नों से ऊपर आधी पिंडली तक धोना ❀ दोनों हाथों से मुंह धोना ❀ हाथ पाउं धोने में उंगलियों से शुरूअ़ करना ❀ हर उज़्ज धोने के बा'द उस पर हाथ फैर कर बूंदें टपका देना ताकि बदन या कपड़े पर न टपकें खुसूसन जब कि मस्जिद में जाना हो कि फ़र्शें मस्जिद पर वुजू के पानी के क़तरे गिराना मक्रूहे तहरीमी है ❀ हर उज़्ज के धोते वक़्त और मस्ह करते वक़्त निय्यते वुजू का हाज़िर रहना ❀ इब्तिदा में بِسْمِ اللَّهِ के साथ साथ दुरूद शरीफ़ और कलिमए शहादत पढ़ लेना ❀ आ'जाए

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुझ पर दुरूद शरीफ़ पढ़ो अल्लाह غُرُوحَلْ تُمِمْ عَلَيَّ رَهْمَتًا
 भेजेगा । (अबुनूर)।

वुजू बिला ज़रूरत न पोंछिये अगर पोंछना हो तब भी बिला ज़रूरत बिल्कुल खुशक न कीजिये कुछ तरी बाकी रखिये कि बरोजे क़ियामत नेकियों के पलड़े में रखी जाएगी ❁ वुजू के बा'द हाथ न झटकें कि शैतान का पंखा है ❁ बा'दे वुजू मियानी (या'नी पाजामे का वोह हिस्सा जो पेशाब गाह के करीब होता है) पर पानी छिड़कना । (पानी छिड़कते वक़्त मियानी को कुरते के दामन में छुपाए रखना मुनासिब है नीज़ वुजू करते वक़्त भी बल्कि हर वक़्त पर्दे में पर्दा करते हुए मियानी को कुरते के दामन या चादर वगैरा के ज़रीए छुपाए रखना हया के करीब है) ❁ अगर मक्रूह वक़्त न हो तो दो रक़अत नफ़ल अदा करना जिसे तहिय्यतुल वुजू कहते हैं ।

(बहारे शरीअत, जि. 1, स. 293, 300)

“काश ! कामिल वुजू नसीब हो” के सोलह हुरूफ़ की निस्बत से वुजू के 16 मक्रूहात

❁ वुजू के लिये नापाक जगह पर बैठना ❁ नापाक जगह वुजू का पानी गिराना ❁ आ'जाए वुजू से लोटे वगैरा में क़तरे टपकाना (मुंह धोते वक़्त भरे हुए चुल्लू में उमूमन चेहरे से पानी के क़तरे गिरते हैं इस का ख़याल रखिये) ❁ क़िब्ले की तरफ़ थूक या बल्ग़म डालना या कुल्ली करना ❁ बे ज़रूरत दुन्या की बात करना ❁ ज़ियादा पानी ख़र्च करना (सदरुशशरीअह मुफ़ती मुहम्मद अमजद अली आ'जमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْفَوْى
 बहारे शरीअत मुख़र्रजा जिल्द अव्वल सफ़हा 302 ता 303 पर फ़रमाते हैं :
 नाक में पानी डालते वक़्त आधा चुल्लू काफी है तो अब पूरा चुल्लू लेना

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़िफ़रत है। (ابن عساکر)

इसराफ़ है) ❁ इतना कम पानी खर्च करना कि सुन्नत अदा न हो (टोंटी न इतनी ज़ियादा खोलें कि पानी हाज़त से ज़ियादा गिरे न इतनी कम खोलें कि सुन्नत भी अदा न हो बल्कि मु-तवस्सित हो) ❁ मुंह पर पानी मारना ❁ मुंह पर पानी डालते वक़्त फूंकना ❁ एक हाथ से मुंह धोना कि रिफ़ाज़ व हुनूद का शिआर है ❁ गले का मस्ह करना ❁ उलटे हाथ से कुल्ली करना या नाक में पानी चढ़ाना ❁ सीधे हाथ से नाक साफ़ करना ❁ तीन जदीद पानियों से तीन बार सर का मस्ह करना ❁ धूप के गर्म पानी से वुजू करना ❁ होंट या आंखें ज़ोर से बन्द करना और अगर कुछ सूखा रह गया तो वुजू ही न होगा। वुजू की हर सुन्नत का तर्क मक्रूह है इसी तरह हर मक्रूह का तर्क सुन्नत। (बहारे शरीअत, जि. 1, स. 300, 301)

धूप के गर्म पानी की वज़ाहत

सदरुशशरीअह, बदरुत्तरीकह हज़रते अल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद अमजद अली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ बहारे शरीअत मुखर्रजा जिल्द अब्वल सफ़हा 301 के हाशिये पर लिखते हैं : “जो पानी धूप से गर्म हो गया उस से वुजू करना मुत्लक़न मक्रूह नहीं बल्कि इस में चन्द कुयूद हैं, जिन का ज़िक्र पानी के बाब में आएगा और इस से वुजू की कराहत तन्ज़ीही है तहरीमी नहीं।” पानी के बाब में सफ़हा 334 पर लिखते हैं : “जो पानी गर्म मुल्क में गर्म मौसिम में सोने चांदी के सिवा किसी और धात के बरतन में धूप में गर्म हो गया, तो जब तक गर्म है उस से वुजू और गुस्ल न चाहिये, न

फ़रमाने मुस्ताफ़ा عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَالْوَسْمُ : जिस ने किताब में मुझ पर दुरुदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फ़िरिशते उस के लिये इस्तिफ़ार (या'नी बख़्शिश की दुआ) करते रहेंगे। (طبرانی)

उस को पीना चाहिये बल्कि बदन को किसी तरह पहुंचना न चाहिये, यहां तक कि अगर उस से कपड़ा भीग जाए तो जब तक ठन्डा न हो ले उस के पहनने से बचें कि उस पानी के इस्ति'माल में अन्देशाए बरस (या'नी बदन पर सफ़ेद दाग़ का अन्देशा) है, फिर भी अगर वुजू या गुस्ल कर लिया तो हो जाएगा।” (बहारे शरीअत, जि. 1, स. 301, 334)

मुस्ता 'मल पानी का अहम मसअला

अगर बे वुजू शख़्स का हाथ या उंगली का पोरा या नाखुन या बदन का कोई टुकड़ा जो वुजू में धोया जाता हो जान बूझ कर या भूल कर दह दर दह (10x10) से कम पानी (म-सलन पानी से भरी हुई बालटी या लोटे वगैरा) में पड़ जाए तो पानी मुस्ता'मल (या'नी इस्ति'माल शुदा) हो गया और अब वुजू और गुस्ल के लाइक न रहा। इसी तरह जिस पर गुस्ल फ़र्ज़ हो उस के जिस्म का कोई बे धुला हुवा हिस्सा पानी से छू जाए तो वोह पानी वुजू और गुस्ल के काम का न रहा। हां अगर धुला हाथ या धुले हुए बदन का कोई हिस्सा पड़ जाए तो हरज नहीं। (बहारे शरीअत, जि. 1, स. 333) (मुस्ता'मल पानी और वुजू व गुस्ल के तफ़्सीली अहकाम सीखने के लिये बहारे शरीअत हिस्सा 2 का मुता-लअ़ा फ़रमाइये)

मिट्टी मिले पानी से वुजू होगा या नहीं

❁ पानी में रैत कीचड़ मिल जाए तो जब तक रक़ीक़ (या'नी पानी पतला) रहे उस से वुजू जाइज़ है। अकूल (आ'ला हज़रत عَلَيْهِ تَعَالَى عَلَيْهِ) फ़रमाते हैं : “मैं कहता हूं”) मगर बिला ज़रूरत कीचड़ मिले हुए (पानी) से वुजू करना मन्अ है कि मुस्ता या'नी सूरत बिगाड़ना है और येह

फरमाने मुस्तफ़ा عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुझ पर एक दिन में 50 बार दुरुद पाक पढ़े क़ियामत के दिन में उस से मुसा-फ़हा करूँ (या'नी हाथ मिलाऊँ)गा । (ابن بشكوال)

शर-अन हुराम है (फ़तावा र-जविय्या मुखर्रजा, जि. 4, स. 650) (मा'लूम हुवा मुंह पर इस तरह मिट्टी मलना कि सूत बिगड़ जाए या मुंह काला करना जैसा कि बा'ज अवकात चोर का कोएले वगैरा से मुंह काला कर देते हैं यह हुराम है क़स्दन काफ़िर का भी मुस्ला करना या'नी चेहरा बिगाड़ना जाइज़ नहीं) ❁ जिस पानी में कोई बदबूदार चीज़ मिल जाए उस से वुजू मक्रूह है खुसूसन अगर उस की बदबू नमाज़ में बाक़ी रहे कि (इस से नमाज़) मक्रूहे तहरीमी होगी । (ऐज़न, स. 650)

पान खाने वाले मु-तवज्जेह हों

मेरे आका आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, वलिय्ये ने'मत, अज़ीमुल ब-र-कत, अज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, हामिये सुन्नत, माहिये बिद्अत, आलिमे शरीअत, पीरे तरीक़त, बाइसे ख़ैरो ब-र-कत, हज़रते अल्लामा मौलाना अलहाज अल हाफ़िज़ अल क़ारी शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : पानों के कसरत से आदी खुसूसन जब कि दांतों में फ़ज़ा (गेप) हो तजरिबे से जानते हैं छालिया के बारीक रेजे और पान के बहुत छोटे छोटे टुकड़े इस तरह मुंह के अतराफ़ व अक्नाफ़ में जा गीर होते हैं (या'नी मुंह के कोनों और दांतों के खांचों में घुस जाते हैं) कि तीन बल्कि कभी दस बारह कुल्लियां भी उन के तस्फ़ियए ताम (या'नी मुकम्मल सफ़ाई) को काफ़ी नहीं होतीं, न ख़िलाल उन्हें निकाल सकता है न मिस्वाक, सिवा कुल्लियों के कि पानी मनाफ़िज़ (या'नी सूराख़ों) में दाख़िल होता और जुम्बिशें देने (या'नी हिलाने) से जमे हुए बारीक ज़रों को ब तदरीज छुड़ा छुड़ा कर लाता है, इस की भी कोई

فَرَمَانِے مُسْتَفَا صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : बरोजे क़ियामत लोगों में से मेरे करीब तर वोह होगा जिस ने दुन्या में मुझ पर ज़ियादा दुरूदे पाक पढ़े होंगे । (ترمذی)

तहूदीद (हृद बन्दी) नहीं हो सकती और येह कामिल तस्फ़िया (या'नी मुकम्मल सफ़ाई) भी बहुत मुअक्कद (या'नी इस की सख़्त ताकीद) है मु-तअहद अहदीस में इर्शाद हुवा है कि : “जब बन्दा नमाज़ को खड़ा होता है फ़िरिश्ता उस के मुंह पर अपना मुंह रखता है येह जो पढ़ता है इस के मुंह से निकल कर फ़िरिश्ते के मुंह में जाता है उस वक़्त अगर खाने की कोई शै उस के दांतों में होती है मलाएका को उस से ऐसी सख़्त ईज़ा होती है कि और शै से नहीं होती ।”

हज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम, रसूले मुहूतशम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जब तुम में से कोई रात को नमाज़ के लिये खड़ा हो तो चाहिये कि मिस्वाक कर ले क्यूं कि जब वोह अपनी नमाज़ में क़िराअत करता है तो फ़िरिश्ता अपना मुंह इस के मुंह पर रख लेता है और जो चीज़ इस के मुंह से निकलती है वोह फ़िरिश्ते के मुंह में दाख़िल हो जाती है ।¹ और “त-बरांनी ने कबीर” में हज़रते सय्यिदुना अबू अय्यूब अन्सारी رَضِيَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत की है कि दोनों फ़िरिश्तों पर इस से ज़ियादा कोई चीज़ गिरां नहीं कि वोह अपने साथी को नमाज़ पढ़ता देखें और उस के दांतों में खाने के रेजे फंसे हों ।

(الْمُعْجَمُ الْكَبِيرُ، ٤، ص ١٧٧، حدیث ٤٠٦١) ، فِتاوا ر-जविय्या मुखर्रजा, जि. 1, स. 624, 625)

तसव्वुफ़ का अज़ीम म-दनी नुस्खा

हुज्जतुल इस्लाम हज़रते सय्यिदुना इमाम अबू हामिद मुहम्मद बिन मुहम्मद बिन मुहम्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِي फ़रमाते हैं : बुजू से

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर एक मरतबा दुरूद पढ़ा अल्लाह उस पर दस रहमते भेजता और उस के नामए आ'माल में दस नेकियां लिखता है। (त्रमिदी)

फ़रागत के बा'द जब आप नमाज़ की तरफ़ मु-तवज्जेह हों उस वक़्त येह तसव्वुर कीजिये कि जिन ज़ाहिरी आ'जा पर लोगों की नज़र पड़ती है वोह तो ब ज़ाहिर त़ाहिर (या'नी पाक) हो चुके मगर दिल को पाक किये बिगैर बारगाहे इलाही عَزَّ وَجَلَّ में मुनाजात करना हया के ख़िलाफ़ है क्यूं कि अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ दिलों को भी देखने वाला है। मज़ीद फ़रमाते हैं : ज़ाहिरी वुजू कर लेने वाले को येह बात याद रखनी चाहिये कि दिल की त़हारत (या'नी सफ़ाई) तौबा करने और गुनाहों को छोड़ने और उम्दा अख़्लाक अपनाणे से होती है। जो शख़्स दिल को गुनाहों की आलू-दगियों से पाक नहीं करता फ़क़त ज़ाहिरी त़हारत (या'नी सफ़ाई) और ज़ैबो ज़ीनत पर इक्तिफ़ा करता है उस की मिसाल उस शख़्स की सी है जो बादशाह को मद्दु करता है और अपने घर को बाहर से ख़ूब चमकाता है और रंगो रोगन करता है मगर मकान के अन्दरूनी हिस्से की सफ़ाई पर कोई तवज्जोह नहीं देता। अब ऐसी सूूरत में जब बादशाह उस के मकान के अन्दर आ कर गन्दगियां देखेगा तो वोह नाराज़ होगा या राज़ी येह हर ज़ी शुऊर खुद समझ सकता है।

(اَحْيَاءُ الْعُلُومِ ج ١ ص ١٨٥ مَلْخَصًا)

“सब कर” के पांच हुरूफ़ की निस्बत से

ज़ख़्म वगैरा से ख़ून निकलने के 5 अहक़ाम

❁ खून, पीप या ज़र्द पानी कहीं से निकल कर बहा और उस के बहने में ऐसी जगह पहुंचने की सलाहियत थी जिस जगह का वुजू या गुस्ल में धोना फ़र्ज़ है तो वुजू जाता रहा। (बहारे शरीअत, जि. 1, स. 304)

फ़रमाने मुस्तफ़ा عَلَى اللَّهِ تَعَالَى غَلِيظٌ أَلِيٌّ وَسَلْمٌ : शबे जुमुआ और रोजे मुझ पर दुरूद की कसरत कर लिया करो जो ऐसा करेगा क़ियामत के दिन मैं उस का शफ़ीअ व गवाह बनूंगा । (شعب الإيمان)

❁ खून अगर चमका या उभरा और बहा नहीं जैसे सूई की नोक या चाकू का कनारा लग जाता है और खून उभर या चमक जाता है या खिलाल किया या मिस्वाक की या उंगली से दांत मांझे या दांत से कोई चीज़ म-सलन सेब वगैरा काटा उस पर खून का असर ज़ाहिर हुवा या नाक में उंगली डाली इस पर खून की सुर्खी आ गई मगर वोह खून बहने के काबिल न था **वुजू** नहीं टूटा । (ऐज़न) ❁ अगर बहा मगर बह कर ऐसी जगह नहीं आया जिस का गुस्ल या **वुजू** में धोना फ़र्ज़ हो म-सलन आंख में दाना था और टूट कर अन्दर ही फैल गया बाहर नहीं निकला या पीप या खून कान के सूराखों के अन्दर ही रहा बाहर न निकला तो इन सूरतों में **वुजू** न टूटा (ऐज़न, स. 27) ❁ ज़ख़्म बेशक बड़ा है रतूबत चमक रही है मगर जब तक बहेगी नहीं **वुजू** नहीं टूटेगा । (ऐज़न) ❁ ज़ख़्म का खून बार बार पोंछते रहे कि बहने की नौबत न आई तो गौर कर लीजिये कि अगर इतना खून पोंछ लिया है कि अगर न पोंछते तो बह जाता तो **वुजू** टूट गया, नहीं तो नहीं । (ऐज़न)

सर्दी से आ'जा फट जाएं तो.....

सर्दी वगैरा से आ'जा फट गए धो सके धोए, ठन्डा पानी नुक्सान करे तो गर्म पानी अगर कर सकता हो करना वाजिब, अगर गर्म से भी नुक्सान हो तो मस्ह करे, अगर मस्ह भी नुक्सान दे तो उस पर जो पट्टी बंधी या दवा का ज़िमाद (या'नी लेप) है उस पर पानी बहाए, येह भी ज़रर (या'नी नुक्सान) दे तो उस पट्टी या ज़िमाद (या'नी लेप, PESTE) पूरे पर मस्ह करे इस से (भी) नुक्सान हो तो छोड़ दे, मुआफ़ है ।

(फ़तावा र-ज़विय्या मुखर्रजा, जि. 4, स. 620)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुझ पर एक बार दुरुद पढ़ता है अल्लाह उस के लिये एक क़ोरात अज़्र लिखता है और क़ोरात उहुद पहाड़ जितना है। (عمران)

वुजू में मेहंदी और सुरमे का मस्अला

✿ औरत के हाथ पाउं पर मेहंदी का जिर्म लगा रह गया और ख़बर न हुई तो वुजू व गुस्ल हो जाएगा। हां जब इत्तिलाअ़ हो छुड़ा कर वहां पानी बहा दे। (फ़तावा र-जविय्या मुख़र्रजा, जि. 4, स. 613)

✿ सुरमा आंख के कूए (या'नी आंख के कोने) या पलक में रह गया और इत्तिलाअ़ न हुई ज़ाहिरन हरज नहीं और बा'दे नमाज़ कूए (आंख के कोने) में महसूस हुवा तो अस्लन बाक (या'नी बिल्कुल अन्देशा) नहीं। (मतलब येह कि नमाज़ हो गई) (ऐज़न)

इन्जेक्शन लगाने से वुजू टूटेगा या नहीं ?

✿ गोशत में इन्जेक्शन लगाने में सिर्फ़ इसी सूरत में वुजू टूटेगा जब कि बहने की मिक्दार में खून निकले ✿ जब कि नस का इन्जेक्शन लगा कर पहले खून ऊपर की तरफ़ खींचते हैं जो कि बहने की मिक्दार में होता है लिहाज़ा वुजू टूट जाता है ✿ इसी तरह ग्लूकोज़ वगैरा की ड्रिप नस में लगवाने से वुजू टूट जाएगा क्यूं कि बहने की मिक्दार में खून निकल कर नलकी में आ जाता है। हां बहने की मिक्दार में खून नलकी में न आए तो वुजू नहीं टूटेगा ✿ सिरिंज के ज़रीए टेस्ट करने के लिये खून निकालने से वुजू टूट जाता है क्यूं कि येह बहने की मिक्दार में होता है इसी लिये येह खून पेशाब की तरह नापाक भी होता है, खून से भरी हुई शीशी जेब में रख कर नमाज़ पढ़ी, न हुई नीज़ खून या पेशाब की शीशी अगर्चे अच्छी तरह बन्द हो मस्जिद के अन्दर भी नहीं ला सकते, लाएंगे तो गुनहगार होंगे।

फरमाने मुस्तफ़ा عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जब तुम रसूलों पर दुरूद पढ़ो तो मुझ पर भी पढ़ो, बेशक मैं तमाम जहानों के रब का रसूल हूँ। (جمع الجوامع)

दुखती आंख के आंसू

❁ आंख की बीमारी के सबब जो आंसू बहा वोह नापाक है और वुजू भी तोड़ देगा। (बहारे शरीअत, जि. 1, स. 310) अफ़सोस ! अक्सर लोग इस मस्अले से ना वाक़िफ़ होते हैं और **दुखती आंख** से ब वज्हे मरज़ बहने वाले आंसू को और आंसूओं की मानिन्द समझ कर आस्तीन या कुरते के दामन वगैरा से पोंछ कर कपड़े नापाक कर डालते हैं ❁ नाबीना की आंख से जो रतूबत ब वज्हे मरज़ निकलती है वोह नापाक है और इस से वुजू भी टूट जाता है। (माखूज़ अज़ बहारे शरीअत, जि. 1, स. 306)

पाक और नापाक रतूबत

❁ जो रतूबत इन्सानी बदन से निकले और वुजू न तोड़े वोह नापाक नहीं। म-सलन खून या पीप बह कर न निकले या थोड़ी कै कि मुंह भर न हो पाक है। (बहारे शरीअत, जि. 1, स. 309)

छाला और फुड़िया

❁ छाला नोच डाला अगर उस का पानी बह गया तो वुजू टूट गया वरना नहीं। (ऐज़न, स. 305) ❁ फुड़िया बिल्कुल अच्छी हो गई उस की मुर्दा खाल बाकी है जिस में ऊपर मुंह और अन्दर ख़ला है अगर उस में पानी भर गया और दबा कर निकाला तो न वुजू जाए न वोह पानी नापाक। हां अगर उस के अन्दर कुछ तरी खून वगैरा की बाकी है तो वुजू भी जाता रहेगा और वोह पानी भी नापाक है। (फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 1, स. 355, 356) ❁ ख़ारिश या फुड़ियों में अगर बहने वाली रतूबत न हो सिर्फ़ चिपक हो और कपड़ा उस से बार बार छू कर चाहे कितना

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुझ पर दुरूद पढ़ कर अपनी मजालिस को आरास्ता करो कि तुम्हारा दुरूद पढ़ना बरोज़े क़ियामत तुम्हारे लिये नूर होगा । (فردوس الاعجاز)

ही सन जाए पाक है । (बहारे शरीअत, जि. 1, स. 310) ❁ नाक साफ़ की उस में से जमा हुवा खून निकला वुजू न टूटा, अन्सब (या'नी ज़ियादा मुनासिब) येह है कि वुजू करे । (फ़तावा र-ज़विय्या मुख़रजा, जि. 1, स. 281)

कै से वुजू कब टूटता है ?

❁ मुंह भर कै खाने, पानी या सफ़रा (या'नी पीले रंग का कड़वा पानी) की वुजू तोड़ देती है । जो कै तकल्लुफ़ के बिगैर न रोकी जा सके उसे मुंह भर कहते हैं । मुंह भर कै पेशाब की तरह नापाक होती है इस के छींटों से अपने कपड़े और बदन को बचाना ज़रूरी है ।

(माखूज़ अज़ बहारे शरीअत, जि. 1, स. 306, 390 वगैरा)

हंसने के अहकाम

❁ 1 रुकूअ व सुजूद वाली नमाज़ में बालिग़ ने क़हक़हा लगा दिया या'नी इतनी आवाज़ से हंसा कि आस पास वालों ने सुना तो वुजू भी गया और नमाज़ भी गई, अगर इतनी आवाज़ से हंसा कि सिर्फ़ खुद सुना तो नमाज़ गई वुजू बाकी है, मुस्कुराने से न नमाज़ जाएगी न वुजू । मुस्कुराने में आवाज़ बिलकुल नहीं होती सिर्फ़ दांत ज़ाहिर होते हैं

❁ 2 (مَرَأِي الْفَلَّاحِ ص ١٤) बालिग़ ने नमाजे जनाज़ा में क़हक़हा लगाया तो नमाज़ टूट गई वुजू बाकी है । ❁ 3 (اَيْخَانًا) नमाज़ के इलावा क़हक़हा लगाने से वुजू नहीं जाता मगर दोबारा कर लेना मुस्तहब है ।

(مَرَأِي الْفَلَّاحِ ص ١٠) हमारे मीठे मीठे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने कभी भी क़हक़हा नहीं लगाया लिहाज़ा हमें भी कोशिश करनी चाहिये कि येह सुन्नत भी ज़िन्दा हो और हम जोर जोर से न हंसें । फ़रमाने

फरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुझ पर दुरुदे पाक की कसरत करो बेशक यह तुम्हारे लिये त्हा रत है। (अबुल)।

یا'नी الْقَهْقَهَةُ مِنَ الشَّيْطَانِ وَالتَّبَسُّمُ مِنَ اللَّهِ تَعَالَى : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ مُسْتَفَا कहकहा शैतान की तरफ़ से है और मुस्कुराना अल्लाह عزّ وجلّ की तरफ़ से है।

(الْمُعْجَمُ الصَّغِيرُ لِلطَّبْرَانِيِّ ج ٢ ص ١٠٤)

क्या सत्र देखने से वुजू टूट जाता है ?

अवाम में मशहूर है कि घटना या सत्र खुलने या अपना या पराया सत्र देखने से वुजू टूट जाता है येह बिल्कुल ग़लत है। हां वुजू के आदाब से है कि नाफ़ से ले कर दोनों घटनों समेत सब सत्र छुपा हो बल्कि इस्तिन्जा के बा'द फ़ौरन ही छुपा लेना चाहिये कि बिगैर ज़रूरत सत्र खुला रखना मन्अ और दूसरों के सामने सत्र खोलना हराम है।

(बहारे शरीअत, जि. 1, स. 309)

गुस्ल का वुजू काफी है

गुस्ल के लिये जो वुजू किया था वोही काफी है ख़्वाह बरहना नहाएं। अब गुस्ल के बा'द दोबारा वुजू करना ज़रूरी नहीं बल्कि अगर वुजू न भी किया हो तो गुस्ल कर लेने से आ'जाए वुजू पर भी पानी बह जाता है लिहाज़ा वुजू भी हो गया, कपड़े तब्दील करने से भी वुजू नहीं जाता।

थूक में ख़ून

﴿1﴾ मुंह से ख़ून निकला अगर थूक पर ग़ालिब है तो वुजू टूट जाएगा वरना नहीं, ग़-लबे की शनाख़्त येह है कि अगर थूक का रंग सुर्ख़ हो जाए तो ख़ून ग़ालिब समझा जाएगा और वुजू टूट जाएगा येह सुर्ख़ थूक नापाक भी है। अगर थूक ज़र्द (या'नी पीला) हो तो ख़ून पर थूक ग़ालिब माना जाएगा लिहाज़ा न वुजू टूटेगा न येह ज़र्द थूक नापाक।

(बहारे शरीअत, जि. 1, स. 305)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुझ पर रोज़े जुमुआ दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस को शफ़ाअत करूँगा। (ब्रह्मण्ड)

﴿2﴾ मुंह से इतना खून निकला कि थूक सुख़ हो गया और लोटे या गिलास से मुंह लगा कर कुल्ली के लिये पानी लिया तो लोटा गिलास और कुल पानी नजिस हो गया लिहाज़ा ऐसे मौक़अ पर चुल्लू में पानी ले कर एह़तियात से कुल्ली कीजिये और येह भी एह़तियात फ़रमाइये कि छींटे उड़ कर आप के कपड़ों वग़ैरा पर न पड़ें।

वुजू में शक़ आने के 5 अहक़ाम

✽ अगर दौराने वुजू किसी उज़्व के धोने में शक़ वाक़ेअ हो और अगर येह ज़िन्दगी का पहला वाक़िआ है तो इस को धो लीजिये और अगर अक्सर शक़ पड़ा करता है तो इस की तरफ़ तवज्जोह न दीजिये। इसी तरह अगर बा'दे वुजू भी शक़ पड़े तो इस का कुछ ख़याल मत कीजिये। (बहारे शरीअत, जि. 1, स. 310) ✽ आप बा वुजू थे अब शक़ आने लगा कि पता नहीं वुजू है या नहीं, ऐसी सूरत में आप बा वुजू हैं क्यूं कि सिर्फ़ शक़ से वुजू नहीं टूटता। (ऐज़न, स. 311) ✽ वस्वसे की सूरत में एह़तियातन वुजू करना एह़तियात नहीं इत्तिबाएअ शैतान है (ऐज़न) ✽ यकीनन आप उस वक़्त तक बा वुजू हैं जब तक वुजू टूटने का ऐसा यकीन न हो जाए कि क़सम खा सकें ✽ कोई उज़्व धोने से रह गया है मगर येह याद नहीं कौन सा उज़्व था तो बायां (या'नी उलटा) पाउं धो लीजिये।

(दُرْمُخْتَار ج ١ ص ٣١٠)

सोने से वुजू टूटने न टूटने का बयान

नींद से वुजू टूटने की दो शर्तें हैं : ﴿1﴾ दोनों सुरीन अच्छी तरह जमे हुए न हों ﴿2﴾ ऐसी हालत पर सोया जो ग़ाफ़िल हो कर सोने में रुकावट न हो। जब दोनों शर्तें जम्अ हों या'नी सुरीन भी अच्छी तरह जमे

फ़रमाने मुस्तफ़ा عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : उस शख्स को नाक खाक आलूद हो जिस के पास मेरा जि़क़्र हो और वोह मुज़्न पर दुरूदे पाक न पढ़े । (ع/)

हुए न हों नीज़ ऐसी हालत में सोया हो जो गाफ़िल हो कर सोने में रुकावट न हो तो ऐसी नींद से वुजू टूट जाता है । अगर एक शर्त पाई जाए और दूसरी न पाई जाए तो वुजू नहीं टूटेगा ।

सोने के वोह दस अन्दाज़ जिन से वुजू नहीं टूटता : ﴿1﴾ इस तरह बैठना कि दोनों सुरीन ज़मीन पर हों और दोनों पाउं एक तरफ़ फैलाए हों । (कुरसी, रेल और बस की सीट पर बैठने का भी येही हुक्म है) ﴿2﴾ इस तरह बैठना कि दोनों सुरीन ज़मीन पर हों और पिंडलियों को दोनों हाथों के हल्के में ले ले ख़्वाह हाथ ज़मीन वगैरा पर या सर घुटनों पर रख ले ﴿3﴾ चार ज़ानू या'नी पालती (चोकड़ी) मार कर बैठे ख़्वाह ज़मीन या तख़्त या चारपाई वगैरा पर हो ﴿4﴾ दो ज़ानू सीधा बैठा हो ﴿5﴾ घोड़े या ख़च्चर वगैरा पर ज़ीन रख कर सुवार हो ﴿6﴾ नंगी पीठ पर सुवार हो मगर जानवर चढ़ाई पर चढ़ रहा हो या रास्ता हमवार हो ﴿7﴾ तक्ये से टेक लगा कर इस तरह बैठा हो कि सुरीन जमे हुए हों अगर्चे तक्या हटाने से येह गिर पड़े ﴿8﴾ खड़ा हो ﴿9﴾ रुकूअ की हालत में हो ﴿10﴾ सुन्नत के मुताबिक़ जिस तरह मर्द सज्दा करता है इस तरह सज्दा करे कि पेट रानों और बाजू पहलूओं से जुदा हों मज़क़ूरा सूरते नमाज़ में वाक़ेअ हों या इलावा नमाज़, वुजू नहीं टूटेगा और नमाज़ भी फ़ासिद न होगी अगर्चे क़स्दन सोए, अलबत्ता जो रुक्न बिल्कुल सोते हुए अदा किया उस का इअ़ादा (या'नी दोबारा अदा करना) ज़रूरी है और जागते हुए शुरूअ किया फिर नींद आ गई तो जो हिस्सा जागते अदा किया वोह अदा हो गया बक़िय्या अदा करना होगा ।

सोने के वोह दस अन्दाज़ जिन से वुजू टूट जाता है :

फरमाने मुस्तफा عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस पर दस रहमतें भेजता है। (مسلم)

﴿1﴾ उकड़ूं या'नी पाउं के तल्वों के बल इस तरह बैठा हो कि दोनों घुटने खड़े रहें ﴿2﴾ चित या'नी पीठ के बल लैटा हो ﴿3﴾ पट या'नी पेट के बल लैटा हो ﴿4﴾ दाई या बाई करवट लैटा हो ﴿5﴾ एक कोहनी पर टेक लगा कर सो जाए ﴿6﴾ बैठ कर इस तरह सोया कि एक करवट झुका हो जिस की वजह से एक या दोनों सुरीन उठे हुए हों ﴿7﴾ नंगी पीठ पर सुवार हो और जानवर पस्ती (या'नी निचान) की जानिब उतर रहा हो ﴿8﴾ पेट रानों पर रख कर दो जानू इस तरह बैठे सोया कि दोनों सुरीन जमे न रहें ﴿9﴾ चार जानू या'नी चोकड़ी मार कर इस तरह बैठे कि सर रानों या पिंडलियों पर रखा हो ﴿10﴾ जिस तरह औरत सज्दा करती है इस तरह सज्दे के अन्दाज़ पर सोया कि पेट रानों और बाजू पहलूओं से मिले हुए हों या कलाइयां बिछी हुई हों। मज़कूरा सूरतें नमाज़ में वाक़ेअ हों या नमाज़ के इलावा वुजू टूट जाएगा। फिर अगर इन सूरतों में क़स्दन सोया तो नमाज़ फ़ासिद हो गई और बिला क़स्द सोया तो वुजू टूट जाएगा मगर नमाज़ बाक़ी है। बा'दे वुजू (मख़सूस शराइत के साथ) बक़िय्या नमाज़ उसी जगह से पढ़ सकता है जहां नौद आई थी। शराइत न मा'लूम हों तो नए सिरे से पढ़ ले। (माख़ूज़ अज़ फ़तावा र-जविय्या मुख़र्रजा, जि. 1, स. 365 ता 367)

वुजूए अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام और नौद मुबारक

अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام का वुजू सोने से नहीं जाता। फ़ाएदा :

अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام की आंखें सोती हैं दिल कभी नहीं सोता

❁ बा'ज़ नवाक़िजे वुजू (या'नी बा'ज़ वुजू तोड़ने वाली चीज़ें) अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام के लिये यूं नाक़िजे वुजू (वुजू टूटने का सबब) नहीं कि इन का वुकूअ (या'नी वाक़ेअ होना) ही उन से मुहाल (या'नी ना मुम्किन) है

फ़रमाने मुस्तफ़ा عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَعَلَيْهِ وَسَلَّمَ : उस शख्स को नाक खाक आलूद हो जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पड़े। (ترمذی)

जैसे जुनून (या'नी पागल पन) या नमाज़ में क़हक़हा ❁ ग़शी (या'नी बेहोशी) भी अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام के जिस्मे ज़ाहिर पर तारी हो सकती है, दिल मुबारक इस हालत में भी बेदार व ख़बरदार रहता।

(फ़तावा र-ज़विय्या मुखर्रजा, जि. 4, स. 740)

मसाजिद के वुज़ूख़ाने

मिस्वाक करने से बा'ज़ अवक़ात दांतों में खून आ जाता है और थूक भी सुख़ होने की वजह से नापाक हो जाता है मगर अफ़्सोस कि एहतियात नहीं की जाती। मसाजिद के वुज़ूख़ाने भी अक्सर कम गहरे होते हैं जिस की वजह से सुख़ थूक वाली कुल्ली के छींटे कपड़ों या बदन पर पड़ते हैं, नीज़ घर के हम्माम के पुख़्ता फ़र्श पर वुज़ू करते वक़्त इस से भी ज़ियादा छींटे पड़ते हैं।

घर में वुज़ूख़ाना बनवाइये

आज कल बेसीन (हाथ धोने की कूंडी) पर खड़े खड़े वुज़ू करने का रवाज है जो कि ख़िलाफ़े मुस्तहब है। **अफ़्सोस !** लोग असाइशों भरी बड़ी बड़ी कोठियां तो बनाते हैं मगर इस में **वुज़ूख़ाना** नहीं बनवाते ! सुन्नतों का दर्द रखने वाले इस्लामी भाइयों की खिदमतों में म-दनी इल्तिजा है कि हो सके तो अपने मकान में कम अज़ कम एक टोंटी का वुज़ूख़ाना ज़रूर बनवाइये। इस में येह एहतियात ज़रूर रखिये कि टोंटी की धार बराहे रास्त फ़र्श पर गिरने के बजाए ढलवान पर गिरे वरना दांतों में खून वगैरा आने की सूरत में बदन या लिबास पर छींटे उड़ने का मस्अला रहेगा अगर आप मोहतात वुज़ूख़ाना बनवाना चाहते हैं तो इसी रिसाले के पीछे दिये हुए नक़्शे से रहनुमाई हासिल कीजिये। ❁ डब्ल्यूसी

फ़रमाने मुस्तफ़ा صلى الله تعالى عليه و آله وسلم : जो मुझ पर दस मरतबा दुरूदे पाक पढ़े अल्लाह عز و جل उस पर सो रहमते नाज़िल फ़रमाता है। (طبرانی)

(W.C.) में पानी से इस्तिन्जा करने की सूरत में उमूमन दोनों पाउं के टख़्नों की तरफ़ छींटे आते हैं लिहाज़ा फ़राग़त के बा'द एहतियातन पाउं के येह हिस्से धो लेने चाहिएं ।

वुजूख़ाना बनवाने का तरीका

एक नल के घरेलू वुजूख़ाने की कुल मसाहत या'नी लम्बाई साढ़े बियालीस इन्च और चौड़ाई पौने उन्चास इन्च, ऊंचाई ज़मीन से पौने चौदह इन्च, इस के ऊपर मज़ीद साढ़े सात इन्च ऊंची निशस्त गाह (SEAT) जिस का अर्ज़ (या'नी चौड़ाई) साढ़े बत्तीस इन्च और लम्बाई एक सिरे से दूसरे सिरे तक या'नी जीने की मानिन्द, इस निशस्त गाह और सामने की दीवार का दरमियानी फ़ासिला 25 इन्च, आगे की तरफ़ इस तरह ढलवान (slope) बनवाइये कि नाली साढ़े सात इन्च से ज़ियादा न हो, पाउं रखने की जगह क़दम की लम्बाई से मा'मूली सी ज़ियादा म-सलन कुल सवा ग्यारह इन्च हो, और इस सारी जगह का अगला हिस्सा साढ़े चार इन्च खुर-दरा रखिये ताकि रगड़ कर पाउं का मैल (खुसूसन सर्दियों में) छुड़ाया जा सके । L (एल) या u (यू) साख़्त का "मिक्सचर नल" नाली की ज़मीन से 32 इन्च ऊपर हो, नल की तरकीब इस तरह रखिये कि पानी की धार ढलवान (slope) पर गिरे और आप के लिये दांतों के खून वगैरा नजासत से बचना आसान हो । हस्बे ज़रूरत तरमीम कर के मसाजिद में भी इसी तरकीब से वुजूख़ाना बनवाया जा सकता है ।

नोट : अगर टाइल्ज़ लगवानी हों तो कम अज़ कम ढलवान में सफ़ेद रंग की लगवाइये ताकि मिस्वाक करने में अगर दांतों से खून आता हो तो थूक वगैरा में नज़र आ जाए ।

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ : صلى الله تعالى عليهم و سلم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरुद पाक न पढ़ा तहकीक वोह बद बख्त हो गया । (ابن)

“या रसूले खुदा” के नव हुरूफ़ की निस्बत से वुजूख़ाने के 9 म-दनी फूल

- ❶ मुम्किन हो तो इसी रिसाले के पीछे दिये हुए नक्शे से रहनुमाई हासिल कर के अपने घर में वुजूख़ाना बनवाइये ।
- ❷ (मि'मार के दलाइल सुने बिगैर) दिये हुए नक्शे के मुताबिक़ बने हुए घरेलू वुजूख़ाने के बालाई (या'नी पाउं रखने वाले) फ़र्श की ढलवान (slope) दो इन्च रखिये ।
- ❸ अगर एक से ज़ियादा नल लगवाने हों तो दो नलों के दरमियान 25 इन्च का फ़ासिला रखिये ।
- ❹ वुजूख़ाने की टोंटी में हस्बे ज़रूरत कपड़ा या प्लास्टिक की निपल लगा लीजिये ।
- ❺ अगर पाइप दीवार के बाहर से लगवाएं तो निशस्त गाह ज़रूरतन एक या दो इन्च मज़ीद दूर कर लीजिये ।
- ❻ बेहतर येह है कि कच्चा काम करवा कर एकआध बार उस पर बैठ कर या वुजू कर के अच्छी तरह देख लेने के बा'द पुख़्ता करवाइये ।
- ❼ वुजूख़ाने या हम्माम वगैरा के फ़र्श पर टाइल्ज़ लगवाने हों तो खुर-दरे (Slip Resistance Tiles) लगवाइये ताकि फिसलने का ख़तरा कम हो जाए ।
- ❽ पाउं रखने की जगह का सिरा (या'नी कनारा) और इस की ढलान के कम अज़ कम दो दो इन्च हिस्से पर टाइल्ज़ न हो बल्कि वोह हिस्सा सीमेन्ट से खुर-दरा और गोल बनवाइये ताकि ज़रूरतन पाउं रगड़ कर मैल छुड़ाया जा सके ।

फरमाने मुस्तफ़ा عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर सुबह व शाम दस दस बार दुरूदे पाक पढ़ा उसे कियामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी। (सूच़ अरबा)

﴿9﴾ बावर्ची ख़ाना, गुस्ल ख़ाना, बैतुल ख़ला का फ़र्श, खुला सेहून, छत, मस्जिद का वुजूख़ाना और जहां जहां पानी बहाने की ज़रूरत पड़ती है उन मक़ामात के फ़र्श की ढलवान (slope) मि'मार जो बताए उस से बिला झिजक डेढ़ गुना (म-सलन वोह दो इन्च कहे तो आप तीन इन्च) रखवाइये। मि'मार तो येही कहेगा कि आप फ़ि़क़र मत कीजिये एक क़तरा भी पानी नहीं रुकेगा अगर आप उस की बातों में आ गए तो हो सकता है ढलवान बराबर न बने लिहाज़ा उस की बात पर ए'तिमाद नहीं करेंगे तो إِنَّ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ इस का फ़ाएदा आप खुद ही देख लेंगे क्यूं कि मुशा-हदा येही है कि अक्सर फ़र्श वगैरा पर जगह जगह पानी खड़ा रह जाता है।

जिन का वुजू न रहता हो उन के लिये 6 अहक़ाम

﴿1﴾ क़तरा आने, पीछे से रीह ख़ारिज होने, ज़ख़्म बहने, दुखती आंख से ब वज्हे मरज़ आंसू बहने, कान, नाफ़, पिस्तान से पानी निकलने, फोड़े या नासूर से रतूबत बहने और दस्त आने से वुजू टूट जाता है। अगर किसी को इस तरह का मरज़ मुसल्सल जारी रहे और शुरूअ से आख़िर तक पूरा एक वक़्त गुज़र गया कि वुजू के साथ नमाज़े फ़र्ज़ अदा न कर सका वोह शर-अन मा'ज़ूर है, एक वुजू से उस वक़्त में जितनी नमाज़ें चाहे पढ़े। इस का वुजू उस मरज़ से नहीं टूटेगा। (बहारे शरीअत, जि. 1, स. 385, ००३, دُرِّمُخْتَارٌ، وَدُلَّ الْمُحْتَارُ ج 1 ص 385) इस मस्अले को मज़ीद आसान लफ़्ज़ों में समझाने की कोशिश करता हूं। इस क़िस्म के मरीज़ और मरीज़ा अपने मा'ज़ूरे शर-ई होने न होने की जांच इस तरह करें कि कोई सी भी दो फ़र्ज़ नमाज़ों के दरमियानी वक़्त में कोशिश करें कि वुजू कर के त़हारत के साथ कम अज़ कम फ़र्ज़ रक्अतें अदा की जा सकें। पूरे वक़्त के दौरान बार

फ़रमाने मुस्तफ़ा عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुरुद शरीफ़ न पढ़ा उस ने जफ़ा की। (عبدالرزاق)

बार कोशिश के बा वुजूद अगर इतनी मोहलत नहीं मिल पाती, वोह इस तरह कि कभी तो दौराने वुजू ही उज़्र लाहिक़ हो जाता है और कभी वुजू मुकम्मल कर लेने के बा'द नमाज़ अदा करते हुए, हत्ता कि आख़िरी वक़्त आ गया तो अब उन्हें इजाज़त है कि वुजू कर के नमाज़ अदा करें नमाज़ हो जाएगी, अब चाहे दौराने अदाइगिये नमाज़, बीमारी के बाइस नजासत बदन से ख़ारिज ही क्यूं न हो रही हो। फु-क़हाए किराम اللهُ السّلام رَحْمَتُهُمُ اللهُ السّلام फ़रमाते हैं : किसी शख़्स की नक्सीर फूट गई या उस का ज़ख़्म बह निकला तो वोह आख़िरी वक़्त का इन्तिज़ार करे अगर खून मुन्क़तअ न हो (बल्कि मुसल्लसल या वक्फ़े वक्फ़े से जारी रहे) तो वक़्त निकलने से पहले वुजू कर के नमाज़ अदा करे। (الْبَيْهَقِيُّ الرَّاقِيُّ ج ١ ص ٣٧٣-٣٧٤)

﴿2﴾ फ़र्ज नमाज़ का वक़्त जाने से मा'ज़ूर का वुजू टूट जाता है जैसे किसी ने अ़स् के वक़्त वुजू किया था तो सूरज गुरुब होते ही वुजू जाता रहा और अगर किसी ने आप़ताब निकलने के बा'द वुजू किया तो जब तक ज़ोहर का वक़्त ख़त्म न हो वुजू न जाएगा कि अभी तक किसी फ़र्ज नमाज़ का वक़्त नहीं गया। फ़र्ज नमाज़ का वक़्त जाते ही मा'ज़ूर का वुजू जाता रहता है और येह हुक्म उस सूरत में होगा जब मा'ज़ूर का उज़्र दौराने वुजू या बा'दे वुजू जाहिर हो, अगर ऐसा न हो और दूसरा कोई ह़दस (या'नी वुजू तोड़ने वाला मुआ-मला) भी लाहिक़ न हो तो फ़र्ज नमाज़ का वक़्त जाने से वुजू नहीं टूटेगा। (بَهَارِ شَرِيْئَتِ، ج. 1، ص. 386، ٥٥٥ رَدُّ الْمَحْتَرَجِ ص ٣٨٦)

﴿3﴾ जब उज़्र साबित हो गया तो जब तक नमाज़ के एक पूरे वक़्त में एक बार भी वोह चीज़ पाई जाए मा'ज़ूर ही रहेगा। म-सलन किसी को सारा वक़्त क़तरा आता रहा और इतनी मोहलत ही न मिली कि वुजू कर के

फरमाने मुस्तफ़ा عَلَى اللَّهِ تَعَالَى غَلَبُوا إِلَهًا وَسَلَّمَ : जो मुझ पर रोजे जुमुआ दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस को शफ़ाअत करूंगा। (جمع الجوامع)

फ़र्ज अदा कर ले तो मा'ज़ूर हो गया। अब दूसरे अवक़ात में इतना मौक़अ मिल जाता है कि वुजू कर के नमाज़ पढ़ ले मगर एकआध दफ़आ क़तरा आ जाता है तो अब भी मा'ज़ूर है। हां अगर पूरा एक वक़्त ऐसा गुज़र गया कि एक बार भी क़तरा न आया तो मा'ज़ूर न रहा फिर जब कभी पहली हालत आई (या'नी सारा वक़्त मुसल्लसल मरज़ हुवा) तो फिर मा'ज़ूर हो गया। (बहारे शरीअत, जि. 1, स. 385)

﴿4﴾ मा'ज़ूर का वुजू उस चीज़ से नहीं जाता जिस के सबब मा'ज़ूर है हां अगर दूसरी कोई चीज़ वुजू तोड़ने वाली पाई गई तो वुजू जाता रहा म-सलन जिस को रीह ख़ारिज होने का मरज़ है क़तरा निकलने से उस का वुजू टूट जाएगा। और जिस को क़तरे का मरज़ है उस का रीह ख़ारिज होने से वुजू जाता रहेगा। (ऐज़न, स. 586)

﴿5﴾ मा'ज़ूर ने किसी ह़दस (या'नी वुजू तोड़ने वाले अमल) के बा'द वुजू किया और वुजू करते वक़्त वोह चीज़ नहीं है जिस के सबब मा'ज़ूर है फिर वुजू के बा'द वोह उज़्र वाली चीज़ पाई गई तो वुजू टूट गया (येह हुक्म इस सूरत में होगा जब मा'ज़ूर ने अपने उज़्र के बजाए किसी दूसरे सबब की वज्ह से वुजू किया हो अगर अपने उज़्र की वज्ह से वुजू किया तो बा'दे वुजू उज़्र पाए जाने की सूरत में वुजू न टूटेगा) म-सलन जिस को क़तरा आता था उस की रीह ख़ारिज हुई और उस ने वुजू किया और वुजू करते वक़्त क़तरा बन्द था और वुजू करने के बा'द क़तरा आया तो वुजू टूट गया। हां अगर वुजू के दरमियान क़तरा जारी था तो न गया।

(بُهَارَةُ شَرِيْئَةِ الْجَمْعِ، رَدُّ الْمُحْتَارِ ج ١ ص ٥٠٧، जि. 1, स. 387)

﴿6﴾ मा'ज़ूर को ऐसा उज़्र हो कि जिस के सबब कपड़े नापाक हो जाते

फरमाने मुस्तफ़ा عَسَى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा उस ने जन्नत का रास्ता छोड़ दिया। (ग़रान)

हैं तो अगर एक दिरहम से ज़ियादा नापाक हो गए और जानता है कि इतना मौक़अ है कि इसे धो कर पाक कपड़ों से नमाज़ पढ़ लूंगा तो पाक कर के नमाज़ पढ़ना फ़र्ज़ है और अगर जानता है कि नमाज़ पढ़ते पढ़ते फिर उतना ही नापाक हो जाएगा तो अब धोना ज़रूरी नहीं। इसी से पढ़े अगर्चे मुसल्ला भी आलूदा हो जाए तब भी उस की नमाज़ हो जाएगी।

(बहारे शरीअत, जि. 1, स. 387)

(मा'जूर के वुजू के तफ़्सीली मसाइल फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा जिल्द 4 सफ़हा 367 ता 375, बहारे शरीअत जिल्द 1 सफ़हा 385 ता 387 से मा'लूम कर लीजिये)

सात मु-तफ़र्रिकात

﴿1﴾ पेशाब, पाख़ाना, मनी, कीड़ा या पथरी मर्द या औरत के आगे या पीछे से निकलें तो वुजू जाता रहेगा। (عالمگیری ج 1 ص 9) ﴿2﴾ मर्द या औरत के पीछे से मा'मूली सी हवा भी ख़ारिज हुई वुजू टूट गया। मर्द या औरत के आगे से हवा ख़ारिज हुई वुजू नहीं टूटेगा। (ایضا، बहारे शरीअत, जि. 1, स. 304) ﴿3﴾ बेहोश हो जाने से वुजू टूट जाता है। (عالمگیری ج 1 ص 11) ﴿4﴾ बा'जू लोग कहते हैं कि ख़िन्ज़ीर का नाम लेने से वुजू टूट जाता है यह ग़लत है ﴿5﴾ दौराने वुजू अगर रीह ख़ारिज हो या किसी सबब से वुजू टूट जाए तो नए सिरे से वुजू कर लीजिये पहले धुले हुए आ'ज़ा बे धुले हो गए। (माख़ूज़ अज़ फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 1, स. 255) ﴿6﴾ कुरआने पाक या उस की किसी आयत को या किसी भी ज़बान में कुरआने पाक का तरजमा हो उस को बे वुजू छूना हराम है (बहारे शरीअत, जि. 1, स. 326, 327 वग़ैरा) ﴿7﴾ आयत को बे छूए देख कर या ज़बानी बे वुजू पढ़ने में हरज नहीं।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुझ पर दुरूदे पाक को कसरत करो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे लिये पाकीजगी का बाइस है। (ब्रिष्ली)

आयत लिखे हुए कागज़ के पिछले हिस्से के छूने का अहम मसअला

किताब या अख़बार में जिस जगह आयत लिखी है खास उस जगह को बिला वुजू हाथ लगाना जाइज़ नहीं उसी तरफ़ हाथ लगाया जिस तरफ़ आयत लिखी है ख़्वाह उस की पुश्त पर (या'नी लिखी हुई आयत के ऐन पीछे) दोनों **ना जाइज़** हैं (आयत या उस के ऐन पिछले हिस्से के इलावा), बाकी वरक़ के छूने में हरज नहीं, पढ़ना बे वुजू जाइज़ है। नहाने की हाजत हो तो (पढ़ना भी) हराम है। وَاللّٰهُ تَعَالٰى اَعْلَمُ

(फ़तावा र-ज़विय्या मुखर्रजा, जि. 4, स. 366)

बे वुजू कुरआने मजीद को कहीं से भी नहीं छू सकता

बे वुजू आयत को छूना तो खुद ही हराम है अगर्चे आयत किसी और किताब में लिखी हो मगर कुरआने मजीद के सादा हाशिया बल्कि पुठों बल्कि चोली (या'नी जो कपड़ा या चमड़ा गते के साथ चिपका या सिला हो उस) का भी छूना हराम है हां “जुजदान” में हो तो जुजदान को हाथ लगा सकता है। बे वुजू अपने सीने से भी मुस्हफ़ शरीफ़ को मस नहीं कर (या'नी छू नहीं) सकता। बे वुजू की गरदन पर लम्बी चादर का एक कोना पड़ा हुवा है और वोह उस के दूसरे कोने को हाथ पर रख कर मुस्हफ़ शरीफ़ छूना चाहे अगर चादर इतनी लम्बी है कि उस शख्स के उठने बैठने से दूसरे गोशे (या'नी कोने) तक ह-र-कत न पहुंचेगी तो जाइज़ है वरना नहीं।

(फ़तावा र-ज़विय्या मुखर्रजा, जि. 4, स. 724, 725)

वुजू में पानी का इसराफ़

आज कल अक्सर लोग वुजू में तेज़ नल खोल कर बे तहाशा पानी बहाते हैं, हत्ता कि बा'ज तो वुजूख़ाने पर आते ही नल खोल देते हैं,

फरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुझ पर दुरुद शरीफ़ न पढ़े तो वोह लोगों में से कन्जूस तरीन शख्स है। (مسند احمد)

इस के बा'द आस्तीन चढ़ाते हैं, उतनी देर तक **مَعَادُ اللَّهِ** **عَزَّوَجَلَّ** पानी जाएअ होता रहता है, इसी तरह मस्ह के दौरान अक्सरिय्यत नल खुला छोड़ देती है ! हम सब को **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** से डर कर **इसराफ़** से बचना चाहिये, कियामत के रोज़ ज़र्रे ज़र्रे और क़तरे क़तरे का हिसाब होगा। इसराफ़ की मज़म्मत में चार अहादीसे मुबा-रका सुनिये और ख़ौफ़े खुदा वन्दी **عَزَّوَجَلَّ** से लरजिये :

﴿1﴾ जारी नहर पर भी इसराफ़

अल्लाह **عَزَّوَجَلَّ** के प्यारे रसूल, रसूले मक़बूल, सय्यिदह आमिना **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** फूल हज़रते **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا** के गुलशन के महक्ते फूल **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** पर गुज़रे तो वोह वुजू कर रहे थे। इर्शाद फ़रमाया : **येह इसराफ़ कैसा ? अर्ज़ की : क्या वुजू में भी इसराफ़ है ?**
फ़रमाया : “हां अगर्चे तुम जारी नहर पर हो।”

(سُنَنِ ابْنِ مَاجَةَ ١/ص ٢٥٤ حدیث ٤٢٥)

आ'ला हज़रत **رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** का फ़तवा

मेरे आका आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत **رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** इस हदीसे पाक के तहत फ़रमाते हैं : हदीस ने नहरे जारी में भी इसराफ़ साबित फ़रमाया और इसराफ़ शर-अ में मज़मूम ही हो कर आया है।
आयए करीमा :

وَلَا تَسْرِفُوا إِنَّهُ لَا يُحِبُّ (तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : बेशक
السَّرْفِينِ (پ الانعام: ١٤١) बे जा ख़रचने वाले उसे पसन्द नहीं।)

मुत्लक है तो येह इसराफ़ भी मज़मूम व मम्मूअ ही होगा बल्कि खुद इसराफ़ फ़िल वुजू में भी सीगए नहय वारिद और नहय हकीकतन मुफ़ीदे तहरीम। (या'नी वुजू में इसराफ़ की नहय (मुमा-न-अत) का हुक्म

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : तुम जहाँ भी हो मुझ पर दुरूद पढ़ो कि तुम्हारा दुरूद मुझ तक पहुँचता है। (طرائف)

आया है और हकीकत में मुमा-न-अत का हुक्म हराम होने का फ़ाएदा देता है) (फ़तावा र-ज़विय्या मुखर्रजा, जि. 1, स. 731)

मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّانِ كَتَبَتْ

मुफ़्त्सिरे शहीर हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّانِ

आ'ला हज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى के फ़तवा में पेश कर्दा सू-रतुल अन्ज़ाम की आयते करीमा नम्बर 141 के तहत बे जा ख़र्च (या'नी इसराफ़) की तफ़्सील बयान करते हुए रक़म तराज हैं : “ना जाइज़ जगह पर ख़र्च करना भी बे जा ख़र्च है और सारा माल ख़ैरात कर के बाल बच्चों को फ़कीर बना देना भी बे जा ख़र्च है, ज़रूरत से ज़ियादा ख़र्च भी बे जा ख़र्च है इसी लिये आ'जाए वुजू को (बिला इजाज़ते शर-ई) चार बार धोना इसराफ़ माना गया है।” (नूरुल इरफ़ान, स. 232)

﴿2﴾ इसराफ़ न कर

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन उमर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا फ़रमाते हैं : अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अनिल उयूब صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने एक शख्स को वुजू करते देखा, फ़रमाया : इसराफ़ न कर इसराफ़ न कर। (سُنَنِ ابْنِ مَاجَةَ ج ١ ص ٢٥٤ حديث ٤٢٤)

﴿3﴾ इसराफ़ शैतानी काम है

हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है : वुजू में बहुत सा पानी बहाने में कुछ ख़ैर (भलाई) नहीं और वोह काम शैतान की तरफ़ से है। (كُنُزُ الْعُقَالِ ج ٩ ص ١٤٤ حديث ٢٦٢٥)

﴿4﴾ जन्नत का सफ़ेद महल मांगना कैसा ?

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह इब्ने मुग़फ़़ल رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने अपने बेटे को इस तरह दुआ मांगते सुना कि इलाही عَزَّ وَجَلَّ ! मैं तुझ से

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो लोग अपनी मजलिस से अल्लाह के जिक्र और नबी पर दुरूद शरीफ़ पढ़े बिगैर उठ गए तो वोह बदबूदार मुर्दार से उठे । (شعب الایمان)

जन्नत का दाहनी (या'नी सीधी) तरफ़ वाला सफ़ेद महल मांगता हूं । तो फ़रमाया कि ऐ मेरे बच्चे ! **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ से जन्नत मांगो और दोज़ख़ से उस की पनाह मांगो । मैं ने **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को फ़रमाते सुना कि इस उम्मत में वोह कौम होगी जो **बुजू** और **दुआ** में हद से तजावुज़ किया करेगी ।

(سُنَنِ ابوداؤد ج ۱ ص ۶۸ حدیث ۹۶)

मुफ़स्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَانِ इस हदीसे पाक के तहूत फ़रमाते हैं : दुआ में तजावुज़ (या'नी हद से बढ़ना) तो येह है कि ऐसी बात का तअय्युन किया जाए जिस की ज़रूरत नहीं जैसे उन के साहिब जादे ने किया । **फ़िरदौस** (जो कि सब से आ'ला जन्नत है उस का) मांगना बहुत बेहतर है कि इस में शख़्सी तअय्युन (या'नी अपनी तरफ़ मुक़रर करना) नहीं नौई तक़रुर (नौअ या'नी क़िस्म मुक़रर करना) है इस का हुक्म दिया गया है ।

(मिरआतुल मनाजीह, जि. 1, स. 293)

बुरा किया, जुल्म किया

एक आ'राबी ने ख़िदमते अक्दस हुज़ूर सय्यिदे आलम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ में हाज़िर हो कर **बुजू** के बारे में पूछा : हुज़ूरे अक्दस صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने उन्हें बुजू कर के दिखाया जिस में हर उज़्व तीन तीन बार धोया फिर फ़रमाया : बुजू इस तरह है, तो जो इस से जाइद करे या कम करे उस ने बुरा किया और जुल्म किया ।

(سُنَنِ نَسَائِي ص ۳۱ حدیث ۱۴۰)

इसराफ़ सिर्फ़ दो सूरतों में ही गुनाह है

मेरे आका आ'ला हज़रते इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ लिखते हैं : येह वईद इस सूरत में है कि जब येह ए'तिकाद रखते हुए

फरमाने मुस्फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर रोज़े जुमुआ दो सो बार दुरुदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआफ़ होंगे। (جمع الجوامع)

ज़ियादा करे कि ज़ियादा करना ही सुन्नत है। और अगर तस्लीस (या'नी तीन बार धोने) को सुन्नत माना और वुजू पर वुजू के इरादे या शक के वक्त इत्मीनाने क़ल्ब के लिये या तबरीद (या'नी ठन्डक के हुसूल) या तन्ज़ीफ़ (या'नी सफ़ाई) के लिये ज़ियादा किया या किसी हाजत की वजह से कमी की तो कोई हरज नहीं। सिर्फ़ दो सूरतों में इसराफ़ ना जाइज़ व गुनाह होता है एक येह कि किसी गुनाह में सर्फ़ व इस्ति'माल करें, दूसरे बेकार महूज़ माल ज़ाएअ़ करें। वुजू व गुस्ल में तीन बार से ज़ाइद पानी डालना जब कि ग़-रज़े सहीह (या'नी जाइज़ मक्सद) से हो हरगिज़ इसराफ़ नहीं कि जाइज़ ग़रज़ में ख़र्च करना न खुद मा'सियत (या'नी ना फ़रमानी) है न बेकार इज़ाअत (या'नी ज़ाएअ़ करना)।

(फ़तावा र-जविय्या जि. 1, जुज़ : ५, स. 940 ता 942)

अ-मली तौर पर वुजू सीखिये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस हदीसे पाक से मा'लूम हुवा कि सिखाने के लिये खुद अ-मली तौर पर वुजू कर के दूसरे को दिखाना सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ से साबित है। मुबल्लिगीन को चाहिये कि इस हदीसे पाक पर अमल करते हुए बिगैर इसराफ़ के सिर्फ़ हस्बे ज़रूरत पानी बहा कर तीन तीन बार आ'जा धो कर वुजू कर के इस्लामी भाइयों को दिखाएं। बिला ज़रूरते शर-ई कोई उज़्व चार बार न धुले इस का ख़याल रखा जाए, फिर जो ब खुशी अपनी इस्लाह करवाना चाहे वोह भी वुजू कर के मुबल्लिग़ को दिखाए और अपनी ग़-लतियां दूर करवाए। दा'वते इस्लामी के सुन्नतों की तरबिय्यत के म-दनी क़ाफ़िलों में आशिक़ाने रसूल की सोहबत में येह म-दनी काम अहूसन तरीके पर हो सकता है। दुरुस्त वुजू करना ज़रूर ज़रूर ज़रूर सीख

फरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुझ पर दुरूद शरीफ़ पढ़ो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम पर रहमत भेजेगा । (अनवरुनी)

लीजिये । सिर्फ़ एकआध बार **वुजू का तरीका** पढ़ लेने से सहीह मा'नों में वुजू करना आ जाए येह बहुत मुशिकल है, बार बार मश्क़ करनी होगी । वुजू सीखने के लिये दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की जारी कर्दा V.C.D बनाम : “वुजू का तरीका” देखना इन्तिहाई मुफ़ीद है ।

मस्जिद और मद्रसे के पानी का इसराफ़

मस्जिद व मद्रसे वगैरा के वुजूख़ाने का पानी “वक्फ़” के हुक्म में होता है । इस पानी और अपने घर के पानी के अहक़ाम में फ़र्क़ होता है । जो लोग मस्जिद के वुजूख़ाने पर बे दर्दी के साथ पानी बहाते हैं बल्कि वुजू में बिला ज़रूरत फ़क़त ग़फ़लत या जहालत के सबब तीन से जाइद मर्तबा आ'जा धोते हैं वोह इस मुबारक फ़तवे पर ख़ूब ग़ौर फ़रमाएं, ख़ौफ़े खुदा عَزَّوَجَلَّ से लरजें और तौबा करें । चुनान्चे मेरे आका आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, वलिय्ये ने'मत, अज़ीमुल ब-र-कत, अज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ू रिसालत, मुजहिदे दीनो मिल्लत, हामिये सुन्नत, माहिये बिद्अत, अल्लिमे शरीअत, पीरे तरीक़त, बाइसे ख़ैरो ब-र-कत, हज़रते अल्लामा मौलाना अलहाज अल हाफ़िज़ अल क़ारी शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : अगर वक्फ़ पानी से वुजू किया तो ज़ियादा ख़र्च करना बिल इत्तिफ़ाक़ ह़राम है क्यूं कि इस में ज़ियादा ख़र्च करने की इजाज़त नहीं दी गई और मदारिस का पानी इसी क़िस्म का होता है जो कि सिर्फ़ उन ही लोगों के लिये वक्फ़ होता है जो शर-ई वुजू करते हैं ।

(फ़तावा र-जविय्या मुखर्रजा, जि. 1, स. 658)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जो अपने आप को इसराफ़ से नहीं

फरमाने मुस्तफा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़िफ़रत है। (ابن عساکر)

बचा पाता उसे चाहिये कि मम्लूका (या'नी अपनी मिल्लिक्यत के) म-सलन अपने घर के पानी से वुजू करे। **مَعَادُ اللَّهِ عَزَّوَجَلَّ** इस का येह मतलब नहीं कि ज़ाती पानी के इसराफ़ की खुली छूट है बल्कि घर में ख़ूब मशक़ कर के शर-ई वुजू सीख ले ताकि मस्जिद के पानी का इसराफ़ कर के हुराम का मुर-तकिब न हो।

“अहमद रज़ा” के सात हुरूफ़ की निस्बत से आ'ला हज़रत की तरफ़ से इसराफ़ से बचने की 7 तदाबीर

﴿1﴾ बा'ज लोग चुल्लू लेने में पानी ऐसा डालते हैं कि उबल जाता है हालां कि जो गिरा बेकार गया इस से एह्तियात चाहिये।

﴿2﴾ हर चुल्लू भरा होना ज़रूरी नहीं बल्कि जिस काम के लिये लें उस का अन्दाज़ा रखें म-सलन **नाक में** नर्म बांसे (या'नी नर्म हड्डी) तक पानी चढ़ाने को पूरा चुल्लू क्या ज़रूर निस्फ़ (या'नी आधा) भी काफ़ी है बल्कि भरा चुल्लू **कुल्ली** के लिये भी दरकार नहीं।

﴿3﴾ **लोटे** की टोंटी मु-तवस्सित मो'तदिल (या'नी दरमियानी) चाहिये कि न ऐसी तंग कि पानी ब-देर (या'नी देर में) दे न फ़राख़ (या'नी कुशादा) कि हाज़त से ज़ियादा गिराए, इस का फ़र्क़ यूं मा'लूम हो सकता है कि कटोरों में पानी ले कर वुजू कीजिये तो बहुत ख़र्च होगा यूंही फ़राख़ (या'नी कुशादा) टोंटी से बहाना ज़ियादा ख़र्च का बाइस है। अगर लोटा ऐसा (या'नी कुशादा टोंटी वाला) हो तो एह्तियात करे पूरी धार न गिराए बल्कि बारीक। (नल खोलने में भी इन्हीं बातों का ख़याल रखिये)

﴿4﴾ आ'ज़ा धोने से पहले उन पर भीगा हाथ फ़ैर ले कि पानी जल्द दौड़ता है और थोड़ा (पानी), बहुत (से पानी) का काम देता है, खुसूसन मौसिमे सरमा (या'नी सर्दियों) में इस की ज़ियादा हाज़त है कि आ'ज़ा में

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने किताब में मुझ पर दुरुदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फिरशते उस के लिये इस्तिफ़ार (या'नी बख़्शिश की दुआ) करते रहेंगे। (طبرانی)

ख़ुश्की होती है और बहती धार बीच में जगह ख़ाली छोड़ देती है जैसा कि मुशा-हदा (या'नी देखी भाली बात) है।

﴿5﴾ कलाइयों पर बाल हों तो तरश्वा (या'नी कटवा) दें कि उन का होना पानी ज़ियादा चाहता है और मूंडने से बाल सख़्त हो जाते हैं और तराशना मशीन से बेहतर कि ख़ूब साफ़ कर देती है और सब से अहूसन व अफ़ज़ल नूरा (एक तरह का बाल सफ़ा पाउडर) है कि इन आ'जा में येही सुन्नत से साबित। चुनान्चे

उम्मुल मुअमिनीन सय्यि-दतुना उम्मे स-लमा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا जब नूरा का इस्ति'माल फ़रमाती हैं : रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ जब नूरा का इस्ति'माल फ़रमाते तो सत्रे मुक़द्दस पर अपने दस्ते मुबारक से लगाते और बाकी ब-दने मुनव्वर पर अज्वाजे मुतहहरात رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُنَّ लगा देतीं।

(ابن ماجه 4 ص 226 حديث 3701)

और ऐसा न करें तो धोने से पहले पानी से ख़ूब भिगो लें कि सब बाल बिछ जाएं वरना खड़े बाल की जड़ में पानी गुज़र गया और नोक से न बहा तो वुजू न होगा।

﴿6﴾ दस्त व पा (हाथ व पाउं) पर अगर लोटे से धार डालें तो नाखुनों से कोहनियों या (पाउं के) गट्टों के ऊपर (या'नी टख़्नों) तक अलल इत्तिसाल (या'नी मुसल्लसल) उतारें कि एक बार में हर जगह पर एक ही बार गिरे, पानी जब कि गिर रहा है और हाथ की रवानी (हिलजुल) में देर होगी तो एक जगह पर मुकर्रर (या'नी बार बार) गिरेगा। (और इस तरह इसराफ़ की सूरत पैदा हो सकती है)

﴿7﴾ बा'ज़ लोग यूं करते हैं कि नाखुन से कोहनी तक या (पाउं के) गट्टे तक बहाते लाए फिर दोबारा सेहबारा के लिये जो नाखुन की तरफ़ ले गए

फरमाने मुस्तफ़ा عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : जो मुझ पर एक दिन में 50 बार दुरूदे पाक पढ़े क़ियामत के दिन में उस से मुसा-फ़हा करूँ (या'नी हाथ मिलाऊँ)गा। (ابن بشكوال)

तो हाथ न रोका बल्कि धार जारी रखी ऐसा न करें कि तस्लीस के इवज़ (या'नी तीन बार के बजाए) पांच बार हो जाएगा बल्कि हर बार कोहनी या (पाउंड के) गट्टे तक ला कर धार रोक लें और रुका हुआ हाथ नाखुनों तक ले जा कर वहां से फिर इजरा (पानी जारी) करें कि सुन्नत येही है कि नाखुन से कोहनियों या गट्टों (टख़्कों) तक पानी बहे न इस का अक्स। (या'नी उलट। मतलब येह कि कोहनी या गट्टे से नाखुनों की तरफ़ पानी बहाते हुए ले जाना सुन्नत नहीं)

कौले जामेअ येह है कि सलीके से काम लें। इमामे शाफ़ेई رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने क्या ख़ूब फ़रमाया : “सलीके से उठाओ तो थोड़ा भी काफ़ी हो जाता है और बद सलीक़गी पर तो बहुत (सा) भी क़िफ़ायत नहीं करता।” (अज़ इफ़ादाते फ़तावा र-जविय्या मुख़र्रजा, जि. 1, स. 765, 770)

“या रब इसराफ़ से बचा” के चौदह हुरूफ़ की निस्बत से इसराफ़ से बचने के लिये 14 म-दनी फूल

﴿1﴾ आज तक जितना भी ना जाइज़ इसराफ़ किया है, उस से तौबा कर के आयिन्दा बचने की भरपूर कोशिश शुरूअ कीजिये।

﴿2﴾ ग़ौरो फ़िक़्र कीजिये कि ऐसी सूरात मु-तअय्यन (या'नी मुक़र्रर) हो जाए कि बुजू और गुस्ल भी सुन्नत के मुताबिक़ हो और पानी भी कम से कम ख़र्च हो। अपने आप को डराइये कि क़ियामत में एक एक ज़र्रे और क़तरे क़तरे का हिसाब होना है। अल्लाह तबा-र-क व तअ़ाला पारह 30 सू-रतुज़्ज़िलज़ाल आयत नम्बर 7 और 8 में इर्शाद फ़रमाता है :

فَمَنْ يَعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ خَيْرًا

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : तो जो

يَرَىٰ ۖ وَمَنْ يَعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ

एक ज़र्रा भर भलाई करे उसे देखेगा और

شَرًّا يَرَىٰ ۖ

जो एक ज़र्रा भर बुराई करे उसे देखेगा।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : बरोज़े कियामत लोगों में से मेरे करीब तर वोह होगा जिस ने दुन्या में मुझ पर ज़ियादा दुरूदे पाक पढ़े होंगे। (ترمذی)

﴿3﴾ **वुजू** करते वक़्त नल एहतियात से खोलिये, दौराने वुजू मुम्किना सूरत में एक हाथ नल के दस्ते पर रखिये और ज़रूरत पूरी होने पर बार बार नल बन्द करते रहिये।

﴿4﴾ **नल** के मुक़ाबले में लोटे से वुजू करने में पानी कम खर्च होता है जिस से मुम्किन हो वोह लोटे से वुजू करे, अगर नल के बिगैर गुज़ारा नहीं तो मुम्किना सूरत में येह भी किया जा सकता है कि जिन जिन आ'ज़ा में आसानी हो वोह लोटे से धो ले। नल से वुजू करना जाइज़ है, बस किसी तरह भी **इसराफ़** से बचने की सूरत निकालनी चाहिये।

﴿5﴾ **मिस्वाक**, कुल्ली, गर-गरा, नाक की सफ़ाई, दाढ़ी और हाथ पांज की उंगलियों का खिलाल और मस्ह करते वक़्त एक भी क़तरा न टपक्ता हो यूं अच्छी तरह नल बन्द करने की आदत बनाइये।

﴿6﴾ **बिल ख़ुसूस** सर्दियों में वुजू या गुस्ल करने नीज़ बरतन और कपड़े वगैरा धोने के लिये गर्म पानी के हुसूल की खातिर नल खोल कर पाइप में जम्अ शुदा ठन्डा पानी यूं ही बहा देने के बजाए किसी बरतन में पहले निकाल लेने की तरकीब बनाइये।

﴿7﴾ **हाथ** या मुंह धोने के लिये साबुन का झाग बनाने में भी पानी एहतियात से खर्च कीजिये। म-सलन हाथ धोने के लिये चुल्लू में पानी के थोड़े क़तरे डाल कर साबुन ले कर झाग बनाया जा सकता है अगर पहले से साबुन हाथ में ले कर पानी डालेंगे तो पानी ज़ियादा खर्च हो सकता है।

﴿8﴾ **इस्ति'माल** के बा'द ऐसी साबुन दानी में साबुन रखिये जिस में पानी बिल्कुल न हो, पानी में रख देने से साबुन घुल कर जाएअ होगा। हाथ धोने के बेसीन के कनारों पर भी साबुन न रखा जाए कि पानी की वजह से जल्दी घुल जाता है।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर एक मरतबा दुरूद पढ़ा अल्लाह उस पर दस रहमते भेजता और उस के नाम ए आ'माल में दस नेकियां लिखता है। (ترمذی)

﴿9﴾ पी चुकने के बा'द गिलास में बचा हुआ पानी फेंक देने के बजाए दूसरे को पिला दीजिये या किसी और इस्ति'माल में लीजिये।

﴿10﴾ फल, कपड़े, बरतन और फर्श बल्कि चाय का कप या एक चम्मच भी धोते वक़्त नीज़ नल खोल कर इस क़दर ज़ियादा ग़ैर ज़रूरी पानी बहाने का आज कल रवाज है कि हुस्सास और दिल जले आदमी से देखा नहीं जाता !!! ऐ काश !

शायद कि उतर जाए तेरे दिल में मेरी बात

﴿11﴾ अक्सर मस्जिदों, घरों, दफ़्तरों, दुकानों वग़ैरा में ख़्वाह म ख़्वाह दिन रात बत्तियां जलती A.C. और पंखे चलते रहते हैं, ज़रूरत पूरी हो जाने के बा'द बत्तियां, पंखे और A.C. और कम्प्यूटर वग़ैरा बन्द कर देने की आदत बनाइये, हम सभी को हिसाबे आख़िरत से डरना और हर मुआ-मले में इसराफ़ से बचते रहना चाहिये।

﴿12﴾ इस्तिन्जा ख़ाने में लोटा इस्ति'माल कीजिये कि फ़व्वारे से त़हारत करने में पानी भी ज़ियादा खर्च होता है और पाउं भी अक्सर आलूदा हो जाते हैं। हर एक को चाहिये कि हर बार पेशाब करने के बा'द एक लोटा पानी ले कर W.C. के कनारों पर थोड़ा सा बहाए फिर क़दरे ऊपर से (मगर छींटों से बचते हुए) बड़े सूराख़ में डाल दिया करे اِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ। बदबू और जरासीम की अफ़ज़ाइश में कमी होगी। “प्लश टैंक” से सफ़ाई में पानी बहुत ज़ियादा सर्फ़ होता है।

﴿13﴾ नल से क़तरे टपक्ते रहते हों तो फ़ौरन इस का हल निकालिये वरना पानी जाएअ़ होता रहेगा। बसा अवक़ात मसाजिद व मदारिस के नल टपक्ते रहते हैं मगर कोई पूछने वाला नहीं होता ! इन्तिज़ामिया को अपनी ज़िम्मादारी समझते हुए अपनी आख़िरत की बेहतरी के लिये फ़ौरन कोई तरकीब करनी चाहिये।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : शबे जुमुआ और रोज़े मुझ पर दुरूद की कसरत कर लिया करो जो ऐसा करेगा कियामत के दिन मैं उस का शफ़ीअ व गवाह बनूंगा । (شعب الإيمان)

﴿14﴾ **खाना खाने, चाय या कोई मशरूब पीने, फल काटने वगैरा मुआ-मलात में ख़ूब एहतियात फ़रमाइये ताकि हर दाना, हर गिज़ाई ज़रा और हर क़तरा इस्ति'माल हो जाए ।**

40 म-दनी फूलों का र-ज़वी गुलदस्ता

(तमाम म-दनी फूल फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा जिल्द 4 के आख़िर में दिये हुए “फ़वाइदे जलीला” सफ़ह 613 ता 746 से लिये गए हैं)

❁ **वुजू** में आंखें ज़ोर से न बन्द करे मगर वुजू हो जाएगा
❁ अगर लब (या'नी होंट) ख़ूब ज़ोर से बन्द कर के **वुजू** किया और कुल्ली न की वुजू न होगा ❁ वुजू का पानी रोज़े कियामत **नेकियों के पल्ले** में रखा जाएगा । (मगर याद रहे ! ज़रूरत से ज़ियादा पानी गिराना इसराफ़ है) ❁ मिस्वाक मौजूद हो तो उंगली से दांत मांजना अदाए **सुन्नत** व हुसूले सवाब के लिये काफ़ी नहीं, हां मिस्वाक न हो तो उंगली या खर-खरा (या'नी खुर-दरा) कपड़ा अदाए **सुन्नत** कर देगा और औरतों के लिये मिस्वाक मौजूद हो जब भी **मिस्सी** काफ़ी है ❁ अंगूठी ढीली हो तो **वुजू** में उसे फिरा कर पानी डालना **सुन्नत** है और तंग हो कि बे जुम्बिश दिये पानी न पहुंचे तो **फ़र्ज** । येही हुक्म बाली (या'नी कान के ज़ेवर) वगैरा का है ❁ आ'ज़ा का मल मल कर धोना **वुजू** और **गुस्ल** दोनों में **सुन्नत** है ❁ आ'ज़ाए वुजू धोने में हद्दे शर-ई से इतनी ख़फ़ीफ़ तहरीर (या'नी हर तरफ़ से मा'मूली सा) बढ़ाना जिस से हद्दे शर-ई तक इस्तीआब (या'नी मुकम्मल होने) में शुबा न रहे **वाजिब** है ❁ वुजू में कुल्ली या नाक में पानी डालने का तर्क मक्रूह है और इस की आदत डाले तो गुनहगार होगा । येह मस्अला वोह लोग ख़ूब याद रखें जो कुल्लियां ऐसी नहीं करते कि हल्क़ तक हर चीज़ को धोएं और वोह कि पानी जिन की नाक को (फ़क़त) छू जाता है सूंघ कर ऊपर नहीं चढ़ाते येह

फ़रमाने मुस्तफ़ा عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : जो मुझ पर एक बार दुरूद पढ़ता है अल्लाह उस के लिये एक क़ौरात अन्न लिखता है और क़ौरात उहुद पहाड़ जितना है। (मैदान)

सब लोग गुनहगार हैं और गुस्ल में तो ऐसा न हो तो सिरे से न गुस्ल होगा न नमाज़ ❀ वुजू में हर उज़्व का पूरा तीन बार धोना सुन्नते मुअक्कदा है, तर्क की आदत से गुनहगार होगा ❀ वुजू में जल्दी न चाहिये बल्कि दरंग (या'नी इत्मीनान) व एहतियात के साथ करे। अ़वाम में जो मशहूर है कि “वुजू जवानों का सा, नमाज़ बूढ़ों की सी” यह वुजू के बारे में ग़लत है ❀ मुंह धोने में न गालों पर डाले न नाक पर न जोर से पेशानी पर, यह सब अफ़़ाल जुह्हाल (या'नी जाहिलों) के हैं बल्कि बा आहिस्तगी बालाए पेशानी (या'नी पेशानी के ऊपर) से डाले कि ठोड़ी से नीचे तक बहता आए ❀ वुजू में मुंह से गिरता हुवा पानी म-सलन कलाई पर लिया और (कलाई पर) बहा लिया (या'नी मुंह धोने में मुंह से गिरने वाले पानी से हाथ की कलाई नहीं धो सकते कि) इस से वुजू न होगा और गुस्ल में (मुआ-मला जुदा है) म-सलन सर का पानी पाउं तक जहां जहां गुज़रेगा पाक करता जाएगा वहां नए पानी की ज़रूरत नहीं ❀ आदमी वुजू करने बैठा फिर किसी मानेअ (या'नी रुकावट) के सबब तमाम (या'नी मुकम्मल) न कर सका तो जितने अफ़़ाल किये उन पर सवाब पाएगा अगर्चे वुजू न हुवा ❀ जिस ने खुद ही क़स्द (या'नी इरादा) किया कि आधा वुजू करेगा वोह इन अफ़़ाल पर सवाब न पाएगा, यूंही जो वुजू करने बैठा और बिला उज़्र नाक़िस (या'नी अधूरा) छोड़ दिया वोह भी जितने अफ़़ाल बजा लाया उन पर मुस्तहिक्के सवाब न होना चाहिये ❀ अगर सर पर मींह (या'नी बारिश) की बूंदें इतनी गिरीं की चहारूम (या'नी चौथाई) सर भीग गया मस्ह हो गया अगर्चे इस शख्स ने हाथ लगाया न क़स्द (या'नी न निय्यत व इरादा) किया ❀ ओस (या'नी शबनम) में सर बरहना (या'नी नंगे सर) बैठा और उस से चहारूम सर के क़दर भीग गया मस्ह हो गया ❀ इतने गर्म या इतने सर्द पानी से वुजू मक्रूह है जो बदन

फ़रमाने मुस्फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जब तुम रसूलों पर दुरूद पढ़ो तो मुझ पर भी पढ़ो, बेशक मैं तमाम जहानों के रब का रसूल हूँ। (جمع الجوامع)

पर अच्छी तरह न डाला जाए, तक्मीले सुन्नत न करने दे, और अगर कोई फ़र्ज पूरा करने से मानेअ (या'नी रुकावट) हुवा तो वुजू ही न होगा

❁ पानी बेकार सर्फ़ (या'नी खर्च) करना या फेंक देना हुराम है। (अपने या दूसरे के पीने के बा'द गिलास या जग का बचा हुवा पानी ख़्वाह म ख़्वाह फेंक देने वाले तौबा करें और आयिन्दा इस से बचें) ❁ नाफ़ से ज़र्द पानी बह कर निकले वुजू जाता रहे ❁ खून या पीप आंख में बहा मगर आंख से बाहर न गया तो वुजू न जाएगा उसे कपड़े से पोंछ कर पानी में डाल दें तो (पानी) नापाक न होगा ❁ ज़ख़्म पर पट्टी बंधी है उस में खून वगैरा लग गया अगर इस काबिल था कि बन्दिश न होती तो बह जाता तो वुजू गया वरना नहीं, न पट्टी नापाक ❁ क़तरा उतर आया या खून वगैरा ज़कर (या'नी उज़्चे तनासुल) के अन्दर बहा जब तक उस के सूराख़ से बाहर न आए वुजू न जाएगा और पेशाब का सिर्फ़ सूराख़ के मुंह पर चमकना (वुजू तोड़ने के लिये) काफ़ी है ❁ ना बालिग़ न कभी बे वुजू हो न जुनुब (या'नी बे गुस्ला)। इन्हें (या'नी ना बालिग़ान को) वुजू व गुस्ल का हुक्म आदत डालने और आदाब सिखाने के लिये है वरना किसी हृदस (या'नी वुजू तोड़ने वाले अमल) से इन का वुजू नहीं जाता न जिमाअ से इन पर गुस्ल फ़र्ज हो ❁ बा वुजू ने मां बाप के कपड़े या उन के खाने के लिये फल या मस्जिद का फ़र्श सवाब के लिये धोया पानी मुस्ता'मल न होगा अगर्चे येह अप़आल कुरबत (या'नी रिज़ाए इलाही) के हैं ❁ ना बालिग़ का पाक हाथ या बदन का कोई जुज़ अगर्चे बे वुजू हो पानी में डालने से काबिले वुजू रहेगा ❁ बदन सुथरा रखना, मैल दूर करना, शर-अ में मतलूब है कि इस्लाम की बिना (या'नी बुन्याद) सुथराई (या'नी पाकीज़गी व सफ़ाई) पर है। इस निय्यत से बा वुजू ने बदन धोया तो कुरबत (या'नी कारे सवाब) बेशक है मगर पानी मुस्ता'मल न हुवा ❁ मुस्ता'मल पानी पाक है इस

फरमाने मुस्ताफा ﷺ : मुझ पर दुरूद पढ़ कर अपनी मजालिस को आरास्ता करो कि तुम्हारा दुरूद पढ़ना बरोजे कियामत तुम्हारे लिये नूर होगा। (फरदुस الاعबार)

से कपड़ा धो सकते हैं मगर इस से वुजू नहीं हो सकता और इस का पीना या इस से आटा गूंधना मकरूहे (तन्जीही) है ❀ पराया पानी बे इजाज़त ले गया अगर्चे ज़बर दस्ती या चुरा कर उस से वुजू हो जाएगा मगर हराम है। अलबत्ता किसी के मम्लूक (या'नी मिल्कियत के) कूएं से उस की मुमा-न-अत पर भी पानी भर लिया उस का इस्ति'माल जाइज़ है ❀ जिस पानी में माए मुस्ता'मल की धार पहुंची या वाजेह क़तरे गिरे उस से वुजू न करना बेहतर ❀ जाड़े में वुजू करने से सर्दी बहुत मा'लूम होगी इस की तकलीफ़ होगी मगर किसी मरज़ का अन्देशा नहीं तो तयम्मूम की इजाज़त नहीं ❀ शैतान के थूक और फूंक से नमाज़ में क़तरे और रीह का शुबा हो जाता है, हुक्म है कि जब तक ऐसा यकीन न हो जिस पर क़सम खा सके इस (वस्वसे) पर लिहाज़ न करे, शैतान कहे कि तेरा वुजू जाता रहा तो दिल में जवाब दे ले कि ख़बीस तू झूटा है और अपनी नमाज़ में मशगूल रहे ❀ मस्जिद को हर घिन की चीज़ से बचाना वाजिब है अगर्चे पाक हो जैसे लुआबे दहन (मुंह की राल, थूक, बल्ग़म) आबे बीनी (म-सलन रीठ या नाक से नज़्ले का बहने वाला पानी) आबे वुजू ❀ **तम्बीह** : बा'ज़ लोग कि वुजू के बा'द अपने मुंह और हाथों से पानी पोंछ कर मस्जिद में हाथ झाड़ते हैं (येह) महज़ हुराम और ना जाइज़ है। ❀ पानी में पेशाब करना मुत्लक़न मकरूह है अगर्चे दरिया में हो ❀ जहां कोई नजासत पड़ी हो तिलावत मकरूह है ❀ पानी जाएअ़ करना हराम है ❀ माल जाएअ़ करना हराम है ❀ ज़मज़म शरीफ़ से गुस्ल व वुजू बिला कराहत जाइज़ है (और पेशाब वगैरा कर के) ढेले (से खुश्क कर लेने) के बा'द (आबे ज़मज़म से) इस्तिन्जा मकरूह और नजासत धोना (म-सलन पेशाब के बा'द टिशू पेपर वगैरा से सुखाए बिगैर) गुनाह ❀ (वोह) इसराफ़

फरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुझ पर दुरुद पाक की कसरत करो बेशक यह तुम्हारे लिये तहारत है। (ابن سنی)

कि (जो) ना जाइज़ व गुनाह है (वोह) सिर्फ़ (इन) दो सूरतों में होता है, एक येह कि किसी गुनाह में सर्फ़ (या'नी खर्च) व इस्ति'माल करें, दूसरे बेकार महज़ माल जाएअ करें ❁ गुस्ले मय्यित सिखाने के लिये मुर्दे को नहलाया और उसे गुस्ल देने की निय्यत न की वोह भी पाक हो गया और जिन्दों पर से भी फ़र्ज़ उतर गया कि फ़े'ल बिल क़स्द काफ़ी है, हां बे निय्यत सवाब न मिलेगा।

या रब्बे मुस्तफ़ा عَزَّ وَجَلَّ ! हमें इसराफ़ से बचते हुए शर-ई वुजू के साथ हर वक़्त बा वुजू रहना नसीब फ़रमा।

اٰمِيْنَ بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْنَ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

ग़मे मदीना, बकीअ,
मग़िफ़रत और बे
हि़साब ज़न्तुल
फ़िरदौस में आका
के पड़ोस का तालिब



15 जूल हिज्जतिल हुराम 1435 सि.हि.

01-10-2014

बावुजू मरने वाला शहीद है

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ अगर तुम हमेशा बा वुजू रहने की इस्तिताअत रखो तो ऐसा ही करो क्यूंकि म-लकुल मौत जिस बन्दे की रूह हालते वुजू में क़ब्ज़ करता है उस के लिये शहादत लिख दी जाती है।

(شُعَبُ الْاِيْمَانِ ج ٣ ص ٢٩ حديث ٢٧٨٢)

येह रिसाला पढ़ कर दूसरे को दे दीजिये

शादी ग़मी की तक़रीबात, इज्तिमाआत, आ'रास और जुलूसे मीलाद वगैरा में मक-त-बतुल मदीना के शाएअ कर्दा रसाइल और म-दनी फूलों पर मुशतमिल पेम्फ़लेट तक़सीम कर के सवाब कमाइये, गाहकों को ब निय्यते सवाब तोहफ़े में देने के लिये अपनी दुकानों पर भी रसाइल रखने का मा'मूल बनाइये, अख़बार फ़रोशों या बच्चों के ज़रीए अपने महल्ले के घर घर में माहाना कम अज़ कम एक अ़दद सुन्नतों भरा रिसाला या म-दनी फूलों का पेम्फ़लेट पहुंचा कर नेकी की दा'वत की धूमें मचाइये और ख़ूब सवाब कमाइये।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुझ पर रोजे जुमुआ दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस को शफ़ाअत करूंगा। (त्रिभाल)

विलादत में आसानी का नुस्खा (मरयम बीबी का फूल)

मरयम बीबी का फूल¹ दर्दे ज़ेह (बच्चे की विलादत का दर्द) शुरूअ होने पर किसी खुले बरतन या डिब्बे में पानी में डाल दिया जाए तो जैसे जैसे तर होता जाएगा येह खिलता जाएगा और अल्लाहु रब्बुल इज़्ज़त की इनायत से मरयम बीबी के फूल की ब-र-कत से बच्चे की विलादत में आसानी होती है।

बिगैर ओपरेशन विलादत हो गई (मरयम बीबी के फूल का फ़ाएदा)

दा 'वते इस्लामी के जामिअतुल मदीना के एक मुदर्रिस म-दनी इस्लामी भाई का बयान है कि मेरे दूसरे बच्चे की विलादत का दिन था, मेरे बच्चों की अम्मी अस्पताल के मख़्मूस कमरे (लेबर रूम) में जा चुकी थीं, कुछ ही देर बा'द मुझे म-दनी मुन्ने की विलादत की खुश ख़बरी मिली। अस्पताल की इन्तिज़ार गाह में एक शख़्स से मुलाक़ात हुई तो उस ने बातों बातों में मरयम बीबी के फूल का ज़िक्र किया तो मेरे दरयाफ़्त करने पर उस ने बताया कि अगर दर्दे ज़ेह (बच्चे की विलादत का दर्द) शुरूअ होने पर इस सूखे फूल को किसी खुले बरतन या डिब्बे में पानी में डाल दिया जाए तो जैसे जैसे तर होता जाएगा येह खिलता जाएगा और इस का फ़ाएदा येह होता है कि बच्चे की विलादत में आसानी होती है। फिर कमोबेश दो साल के बा'द जब तीसरे बच्चे की विलादत का मरहला आया तो लेडी डॉक्टर ने मेरे बच्चों की अम्मी को ज़ेहनी तौर पर

1 : इसे "मरयम बूटी" और "मरयम का पन्जा" भी कहते हैं, पन्जे की शक़ल खुशक हालत में होती है। पन्सारी (देसी दवाओं) की दुकान से मिलना मुम्किन है मक्के मदीने में मक़ामी औरतें और बच्चे ज़मीन पर रख कर चीज़ें बेचते हैं और उन के पास भी मिल सकता है, इस की ख़ासिय्यत और ब-र-कत से वाक़िफ़ आशिकाने रसूल वहां से तबर्कन वतन लाते और दूसरों को तोहफ़तन पेश करते हैं। जिस को दें उस को इस्ति'माल का तरीका समझाना ज़रूरी है। कम पुराना हो तो ज़ियादा बेहतर है।

फ़रमाने मुस्ताफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह عُزَّ وَجَلَّ उस पर दस रहमतें भेजता है। (स्/)

ओपरेशन के ज़रीए विलादत के लिये तय्यार रहने का कहा, मुझे **मरयम बीबी के फूल** का ख़याल आया तो मैं ने पन्सारी (देसी दवाओं) की दुकान से **मरयम बूटी** हासिल कर ली और जब वक़्ते विलादत क़रीब आया तो उसे पानी में डाल दिया, **अल्लाह तआला** के करम से बिगैर ओपरेशन म-दनी मुन्नी की विलादत हो गई। एक अर्से बा'द चौथे बच्चे पर भी डॉक्टर ने ओपरेशन कन्फ़र्म कर दिया लेकिन मैं ने दीगर अवरदो वज़ाइफ़ (जो मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ किताब “घरेलू इलाज” में मौजूद हैं) के साथ साथ **मरयम बूटी** का भी इस्ति'माल किया, यूँ एक बार फिर बिगैर ओपरेशन म-दनी मुन्नी की विलादत हो गई। इस के कमोबेश दो साल बा'द जब पांचवें बच्चे की विलादत मु-तवक्क़अ थी तो हम ने अपने घर के क़रीबी अस्पताल में रुजूअ किया, वहां भी डॉक्टर ने मेडीकल रिपोर्ट्स और अपने तजरिबे की रोशनी में ओपरेशन का ही कहा, मैं ने कोशिश कर के रक़म का भी इन्तिज़ाम रखा और अवरदो वज़ाइफ़ के साथ साथ वक़्ते विलादत क़रीब होने पर **मरयम बूटी** भी खुले मुंह वाले डिब्बे में पानी में डाल दी, डॉक्टर ने बिगैर ओपरेशन विलादत के लिये काफ़ी कोशिश के बा'द ओपरेशन के लिये रक़म जम्अ करवाने का बोला कि अब ओपरेशन के इलावा चारा नहीं और ओपरेशन का इन्तिज़ाम शुरूअ कर दिया, रक़म बैंक में थी मैं अस्पताल के क़रीबी एटीएम मशीन से रक़म निकाल लाया और काउन्टर पर जम्अ करवा दी, लेकिन ओपरेशन से पहले ही **अल्लाह عُزَّ وَجَلَّ** की अता से तन्दुरुस्त व तुवाना म-दनी मुन्ना पैदा होने की खुश ख़बरी मिल गई। **मरयम बूटी** के इस्ति'माल का मैं ने चार या पांच इस्लामी भाइयों को मशवरा दिया उन में से कई एक को डॉक्टर ने ओपरेशन का बोल रखा था, الْحَمْدُ لِلَّهِ عُزَّ وَجَلَّ उन के यहां भी बिगैर ओपरेशन विलादतें हो गईं।

फरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : उस शख्स की नाक खाक आलूद हो जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े ! (ترمذی)

फेहरिस

उन्वान	सफ़ह	उन्वान	सफ़ह
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	1	वुजू की 14 सुन्नतें	12
उस्माने ग़नी का इश्के रसूल	1	वुजू के 29 मुस्तहब्बात	13
गुनाह झड़ने की हिकायत	3	वुजू के 16 मकरूहात	15
वुजू का सवाब नहीं मिलेगा	4	धूप के गर्म पानी की वज़ाहत	16
सारा बदन पाक हो गया !	4	मुस्ता'मल पानी का अहम मस्अला	17
बा वुजू सोने की फ़ज़ीलत	5	मिट्टी मिले पानी से वुजू होगा या नहीं	17
बा वुजू मरने वाला शहीद है	5	पान खाने वाले मु-तवज्जेह हों	18
मुसीबतों से हिफ़ाज़त का नुस्खा	5	तसव्वुफ़ का अज़ीम म-दनी नुस्खा	19
हर वक़्त बा वुजू रहने के सात फ़ज़ाइल	5	ज़ख़म वग़ैरा से खून निकलने के 5 अहक़ाम	20
दुगना सवाब	6	सर्दी से आ'ज़ा फ़ट जाएं तो....	21
सर्दी में वुजू करने की हिकायत	6	वुजू में मेहंदी और सुरमे का मस्अला	22
वुजू का तरीका (ह-नफ़ी)	7	इन्जेक्शन लगाने से वुजू टूटेगा या नहीं ?	22
वुजू के बचे हुए पानी में	9	दुखती आंख के आंसू	23
70 बीमारियों से शिफ़ा		पाक और नापाक रतूबत	23
जन्नत के आठों दरवाज़े खुल जाते हैं	10	छाला और फुडिया	23
नज़र कभी कमज़ोर न हो	10	कै से वुजू कब टूटता है ?	24
वुजू के बा'द तीन बार	11	हंसने के अहक़ाम	24
सूरए क़द्र पढ़ने के फ़ज़ाइल		क्या सत्र देखने से वुजू टूट जाता है ?	25
वुजू के बा'द पढ़ने की दुआ	11	गुस्ल का वुजू काफ़ी है	25
वुजू के बा'द येह दुआ भी पढ़ लीजिये	11	थूक में खून	25
वुजू के चार फ़राइज़	12	वुजू में शक़ आने के 5 अहक़ाम	26
धोने की ता'रीफ़	12	सोने से वुजू टूटने न टूटने का बयान	26

फरमाने मुस्तफा على الله تعالى عليه و اله وسلم : जो मुझ पर दस मरतबा दुरूदे पाक पढ़े अल्लाह عزوجل उस पर सो रहमतें नाज़िल फरमाता है। (طبرانی)

वुजूए अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام	28	जारी नहर पर भी इसराफ़	37
और नींद मुबारक		आ'ला हज़रत का फतवा	37
मसाजिद के वुजूख़ाने	29	मुफ़्ती अहमद यार ख़ान की तफ़्सीर	38
घर में वुजूख़ाना बनवाइये	29	इसराफ़ न कर	38
वुजूख़ाना बनवाने का तरीका	30	इसराफ़ शैतानी काम है	38
वुजूख़ाने के 9 म-दनी फूल	31	जन्नत का सफ़ेद महल मांगना कैसा ?	38
जिन का वुजू न रहता हो उन के लिये	32	बुरा किया, जुल्म किया	39
6 अहकाम		इसराफ़ सिर्फ़ दो सूत्रों में ही गुनाह है	39
सात मु-तफ़रिकात	35	अ-मली तौर पर वुजू सीखिये	40
आयत लिखे हुए कागज़ के पिछले हिस्से	36	मस्जिद और मद्रसे के पानी का इसराफ़	41
के छूने का अहम मस्अला		इसराफ़ से बचने की 7 तदाबीर	42
बे वुजू कुरआने मजीद को कहीं से भी	36	इसराफ़ से बचने के लिये 14 म-दनी फूल	44
नहीं छू सकता		40 म-दनी फूलों का र-ज़वी गुलदस्ता	47
वुजू में पानी का इसराफ़	36	विलादत में आसानी का नुस्खा	52

माخذومراجع

مطبوعه	کتاب	مطبوعه	کتاب
دارالکتب العلمیة بیروت	کنز العمال	میری بھائی کیمپی مرکز الاولیاء لاہور	قران مجید
ضیاء القرآن پبلیکیشنز مرکز الاولیاء لاہور	مرآة المناجیح	دار احیاء التراث العربی بیروت	نور العرفان
کوئٹہ	البحر الرائق	دارالکتب العلمیة بیروت	سنن ابوداؤد
دارالمعرفت بیروت	در مختار و در البحر	دارالمعرفت بیروت	سنن شانی
دارالفکر بیروت	عالمگیری	دارالفکر بیروت	سنن ابن ماجہ
مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی	مراتی الفلاح	دارالفکر بیروت	مشہد امام احمد
دارالفکر بیروت	الجاوای للفتاوی	دار احیاء التراث العربی بیروت	معجم کبیر
دارالکتب العلمیة بیروت	میزان الکبری	دارالکتب العلمیة بیروت	معجم اوسط
دارصادر بیروت	احیاء العلوم	دارالکتب العلمیة بیروت	معجم صغیر
روی پبلیکیشنز مرکز الاولیاء لاہور	مسائل القرآن	مکتبۃ العلوم والحکم مدینہ منورہ	مشہد بزار
رضافاؤڈ پبلیکیشنز مرکز الاولیاء لاہور	فتاوی رضویہ	باب المدینہ کراچی	سنن داری
مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی	بہار شریعت	مدینہ الاولیاء ملتان	سنن دارقطنی
☆☆☆☆☆	☆☆☆☆☆	دارالکتب العلمیة بیروت	شعب الایمان